गाँवां रो साहित्य

भाग पहलड़ो

[पूर्वार्द्ध खण्ड]

संग्रहकर्ता
गिरधारीदान

श्री करणी प्रकाशन
गंगाशहर (बीकानेर)

प्रकाशक
श्री करणी प्रकाशन
गंगाशहर (बीकानेर)

मूल्य ७-०० रु०

मुद्रक
एजूकेशनल प्रेस
फड़ बाजार, बीकानेर

भूमिका


विचारक डॉ. छगनलाल मोहता

पश्चिमी राजस्थान के अधिकतर लोग गांवों में अन्न-जल की अभावयुक्त परिस्थितियों में बसते हैं। उनका जीवन जमीन से जुड़ा हुआ है। मुक्त हवा, खुला आकाश और रेतीले धोरों के वातावरण को कभी सर्दी की मौसम मौत की तरह ठंडा कर देती है तो कभी ग्रीष्म का प्रचंड सूर्य अपनी तेजी से सबको झुलसाने लगता है। इन दोनों अतियों के बीच में सौभाग्य से जब अच्छी वर्षा और बादलों का प्रादुर्भाव होता है तो वातावरण हरा-भरा और स्निग्ध हो जाता है। धरती पर तृण-घास व मोटे अनाज से भरे खेत इस भूखण्ड को नया जीवन प्रदान करते हैं। परन्तु वर्षा प्रायः अनिश्चित रहती है और दूसरे-तीसरे वर्ष अकाल की भयंकर विपत्ति का केवल आभास ही नहीं होता किन्तु वास्तव में उसकी पूरी भयंकरता को भोगना पड़ता है। इन परिस्थितियों में जीवन-संघर्ष करने व जीवित रहने वालों का जो विशेष प्रकार का मानस बना है वह उनकी बोलियों के अखाणों व मुहावरों आदि में अपने पूरे अनुभव को व्यक्त करता है।

हमारे ग्रामीण भाई-बहिन साक्षर कम होते हुए भी एक विशेष अर्थ में अशिक्षित नहीं हैं अर्थात् शिक्षित ही हैं।

निरक्षर होते हुए भी जीवन के अनुभवों को पचा लेने व मौलिक वाणी द्वारा प्रकट कर देने की कुशलता-प्राप्त व्यक्तियों को अशिक्षित नहीं कह सकते। इस प्रकार की शिक्षा के साथ साक्षरता का योग होने से इस शिक्षा में और अधिक सम्पन्नता आती है।

भाई गिरधारीलाल जी प्रौढ़ शिक्षा, सामाजिक शिक्षा और ग्रामीण क्षेत्र की शिक्षा के अनुभवी व्यक्ति हैं। प्रस्तुत पुस्तक में उन्होंने हमारे ग्रामीण जीवन के परिवेश में प्रचलित कविता, मुहावरों और कहावतों का ऐसा सुनिर्वाचित संग्रह किया है जो केवल ग्रामीण ही नहीं किन्तु आसपास के उपनगरों व नगरों में बसने वालों को भी अपने परम्परागत प्राप्त अनुभवमूलक ज्ञान का साक्षात्कार कराता है। प्रत्येक उक्ति के साथ उसका सरल अर्थ भी दे दिया गया है। आशा है कि जिनके लिए यह संकलन प्रकाशित हुआ है, उनको इससे लाभ होगा और इस अंचल के प्रौढ़ शिक्षा संबंधी आंदोलन को इस प्रकार की सामग्री से शक्ति व समर्थन प्राप्त होगा।

—*छगन मोहता*

समर्पण

प्रौढ़ शिक्षा की ज्ञान-गंगा

के भगीरथ

श्री अनिल बोर्डिया

को

सादर समर्पित

—लेखक

प्राक्कथन

आ पोथी बीकानेर प्रौढ़-शिक्षण समिति रै हुक्म मुजब शिक्षा प्रसार केन्द्रां में भणोजणियां भायां वास्ते लिखी है। इये कारण हूं ईं चोखळै रै गांवां में बोल्या जाय तथा गांव वाळां रै समझ में आज्याय वां शब्दां नै ही काम में लेणे री घणी कोशिश करीजी है। इये रै साथै-साथै आ कोशिश भी करीजी है कि गांवां री बोली इसी होवै, जको राजस्थान रै सगळां जिलां तथा भारत रै हिन्दी-भाषी सगळा ही प्रान्तां रै गांवां में बसणियां रै समझ में आज्याय और वानै ईं पोथी हूं क्यूं लाभ पहुंचे।

राजस्थान में मेवाती, हाडोती, ढूंढाड़ी, मेवाड़ी, मालाणी, मारवाड़ी तथा बागड़ी आदि कई तरह री बोल्यां बोलीजै है। आं में हूं कोई एक बोली लेयर जदि कोई

पोथी लिखीजै तो वा दूसरी बोली वाळा रै समझ में आछी तरह को आवैनी।

इये वास्ते म्हारी सगळा मण्यां-गुण्यां मायां हूं आ विणती है कि राजस्थानी बोली इसी होणी जोइजै जकी राजस्थान में बसणियां सगळा ही मांयां रै समझ में आ-ज्याय और वीं हूं लाभ उठा सकै।

हूं ईं बात नै मंजूर करूं के हूं कि इये पोथी री बोली मण्यां-गुण्यां मायां री परख में खरी को उतरैनी। इये रो कारण,ओ है कि न तो हूं ही इतरो भणीजेड़ो हूं कि खरी बोली नै पकड़ सकूं। तथा न ही हालतांई राजस्थानी बोली किसी होसी, इयेरो कोई खास निचोड़ म्हारै देखणै में आयो।

सारी ऊमर देहाती मायां रै सायं गुजारणै रै कारण घणो असर बांरी बोली रो ही पड़्यो। इये कारण हूं गांवां रा मिनख जोयां आपरी बोली में बोलता रहवै है वींया ही आ पोथी लिखीजेड़ी है। जठै तांई हूं समझ-सक्यो हूं वठै तांई तो मनै ओ पक्को भरोसो है कि गांवां रै माया नै तो आ पोथी चोखी ही लागसी; भलांई वै राजस्थान रै किणी ही जिले में वस्ता होवै। पण मण्यां-गुण्यां तथा ऊंची सूज-बूझ वाळां मिनखां री नजर में आ

को आवैनी। फेर मी मनै ओ पक्को भरोसो है कि भण्यां-गुण्यां भाई भी म्हारो ओ पहलड़ो हो काम समझर मनै माफी बक्सा देसी और आगं रै वास्ते सही रास्तो भी दिखाणै रो महरबानी करता रहसी।

हूं बीकानेर प्रौढ-शिक्षण समिति रो घणो आभारी हूं कि वीं मनै गांवां रै भायां वास्ते बांरै ही कामरी पोथी लिखणै रो मोको दियो। मोको ही को दियो नी समिति नै रुपया-पीसा हूं ही म्हारो घणी मदद करी। इयै कारण समिति रै सगळा सदस्यां नै तथा खास कर पूजनीय डा० श्री छगनलाल जी मोहता, श्री उपध्यानचन्द्र जी कोचर, एवं विद्वान डा. महावीर प्रसाद जी दाधीच रो हूं घणो न घणो आभारी हूं जिकां मेरे जिस्ये गांवां में फिरणिये मिनख नै भी याद करयो और लिखण मणोंजण रो काम सोंप्यो।

लिखणै रै काम में हूं अणमणियां प्रोढां रो पांत में ही हूं। इयै कारण हूं हो बीकानेर प्रौढ शिक्षण समिति नै आपरो करतब समझर मनै भी लिखणै रे काम में आगै वधाणै सारू ओ लिखणै रो काम देयर आपरो पूरो-पूरो करतब निभायो। इयै वास्ते हूं समिति रै सगळा ही सदस्यां नै घणो-घणो धनवाद देऊं हूं और आ उम्मेद करूं हूं कि समिति आगं भी म्हारो होसलो और घणो वधातो रहसी।

हूं ठा. रार्मसिह जी बागोड़ सुपुत्र श्री भैरूंसिह जी गांव घोळैरा निवासी रो भी कम आभारी को हूं नी। कारण आपनै इये पोथी नैं छपाणें में म्हारी घणी हूं घणी मदद करी और आगै भी आपरी मदद मिलती रहसी आ आशा बंधाई। भगवान इस्या शिक्षा-प्रेमी मिनखांरी उणती दिनो-दिन करै। म्हारी भगवान हूं आही विणती है।

ग्राम-साहित्य (ले० श्री रामनरेश त्रिपाठी) एवं राजस्थानी लोक-साहित्य (सा. म. श्री नाथूराम संस्कर्ता) नामी पोथ्यां हूं मनै घणी हूं घणी मदद मिली। हूं आ रै विद्वान लेखकां रो घणो अहसाणमंद हूं।

श्री रामनरेश जी त्रिपाठी आपरी पुस्तक "ग्राम साहित्य" री भूमिका में लिख्यो है कि कहावतां रो भंडार तो अपरम्पार समुद्र जिस्यो है। आ बात सवा सोळा आना सही है। आपणी इये पोथी में ईं चोखळै में बोलीजण वाळी कहावतां कोई १३०० रै आसरै छपी है। मंनै पूरो भरोसो है कि गांवां रो-साहित्य भाग दूसरै में १००० हूं कम ओर कहावतां को छपै नी। फेर भी नींवड़ को आवै नी। कारण गांवा रा भाई बात-बात में कहावतां तथा ओखाणां नै काम में लेवता रहवै है। बांरी एक भी बात आपानै इसी को मिलै नी जकी में कहावतां तथा ओखाण को होवै नी।

इये हूं पतो चालै है कि कहावतां री संख्या अपरम्पार समुद्र जिसी है।

हूं श्री वीरेन्द्रकुमारजी सकसेना री भी घणो आभारी हूं। कारण आपने आपरै छापाखाने में ई पोथी नै सगल्यां पोथ्यां हूं पहली छपाणै री हिमायत करी। और गांव री बोली हूं अणजाण होतां थकां भी ई नै सही रूप में छपोजण में घणो मदद करी।

— गिरधारीदास

किसाना री मेह रे बारे में जानकारी

(मान्यताएं)

हमारे देश रो मुख्य धंदो खेती करनो है। अठै १०० में सू ८० हूं घणा मायां रे तो खेती रो ही आधार है। बाने आपरे रहणे-सहणे और समाज रे साथ वर्ताव करने रे अणभव रे साथे-साथे मेह और खेती रे बारे में भी घणो अणभव है, जो आज हूं ही नहीं पिछली अणगिणती री सदियां हूं हो है।

मेह खेती रो एक बहुत बड़ो साधन है। साधन ही नहीं बीने खेती रो जीवन ही मान लियो जाय तो कोई झूठी बात को है नी। इये कारण हूं ही अठै रा खेतीखड़ां रो ध्यान मेह सम्बन्धी जानकारी कानी घणो रह्यो। बां अणभव पर अणभव कर र नखतरां और राशियां में सूरज और चांद रे आणे हूं जमीन रे हवा रे घेरे पर जो प्रमाव पड़े है वींरो ओर ऋतुआं में हवा री चाल हूं जो परिणाम होवे है वींरो भी गहराई हूं अणभव करयो।

आ जानकारी खेतीखड़ा में कद हूं है। इंरो सही

समय तो बताणो घणो मुश्किल है। पुराणे जमाने में जद इये देश री बोलचाल री भाषा संस्कृत रही है तब आ जानकारी संस्कृत भाषा रे श्लोकां में रचेड़ी ही। इये कारण खेती-खड़ा में आंरो ही प्रचार रह्यो होसी।

वराहमिहिर (५०५ ई. के लगभग) री बृहत्संहिता से पतो चाले है कि पुराणे जमाने में गर्ग, पराशर, ओर वात्स्य आदि मुनियों को मेह रे बारे में घणी जानकारी ही ओर बांरी लिखेड़ी पोथ्यां भी ही। पण वह पोथ्यां अब मिले कोनी। अठै बृहत्संहिता रा थोड़ा श्लोक दिया जावे है:—

अन्नं जगतः प्राणाः प्रावट कालस्य चान्न मायत्तम्।
यस्मादतः परीक्ष्य प्रावटकालः प्रयत्नेन ॥

अन्न ही जगत रो जीवण है ओर ओ मेह रे आसरे है। इये कारण हूं उपाय कर र मेह रे समयरी जांच करणी चाहिए।

तल्लक्षणानि मुनिभिर्यानी निबद्धानि तानि दृष्ट्वेदम।
क्रियते गर्ग पराशर काश्यप वात्स्यादि रचितानि ॥

गर्ग, पराशर, काश्यप ओर वात्स्य आदि मुनियों ने मेह रा जो लक्षण लिख्या है, बाने देखर आ पोथी लिखी है।

केचिद्वदन्ति कार्तिक शुक्लान्तमतीत्य गर्भदिवसाः स्युः
न तु तन्मतं वहूना गर्गादीनां मतं वक्ष्ये ॥

कोई-कोई कवै है कि काती रे उजाळे पाख न लांघर मेह रे गर्भ रा दिन आवै है। इये कारण हूं गर्ग आदि मुनियां रा विचार बताऊं हूं।

मार्गशिर शुक्लपक्ष प्रतिपत्प्रभृति क्षपाकरेषाढाम ।
पूर्वा वा समुपगते गर्भाणाम लक्षणं ज्ञेयम ॥

मिगसर रे उजाले पाख री एकम हूं जिके दिन चन्द्रमा पूर्वाषाढ नखतर में होवै है, उणी दिन हूं सारे गर्भों रा लक्षण समझना चाइजे।

मेह रो भी गर्भ पड़ै है, आ बात इये समय र विज्ञान रे लिये एक नई बात है। पर इये पर बृहत्संहिता में विस्तार हूं लिख्यो है। उणी में से थोड़ा सा श्लोक आगे हूं लिख्या है:—

यन्न क्षत्र मुपगते गर्भश्चन्द्रे भवेत स चन्द्रवशात ।
पञ्चनवते दिन शेत तत्रैव प्रसव मायाति ॥

चन्द्रमा रे जिण नखतर में आणो से बादल में गर्भ होवै है। चन्द्रमा के वश से १९५ दिना में उण गर्भ रो

जन्म होवै है ।

सित पक्ष भवाः कृष्णे शुक्ले कृष्णा द्युसंभवा रात्रौ ।
नक्तं प्रभवश्चाहनि सन्ध्याजाताश्च सन्ध्यायाम ॥

जिको गर्भ उजाळे पाख में पड़ै है, वह अन्धेरे पाख में, जिको अन्धारे पाख में पड़ै है, वह उजाळे पाख में, जिको दिन में पड़ै है वह रात में, जिको रात में पड़ै है, वो दिन रे किणी भाग में और जिको संध्या में पड़ै है वींरो जन्म संध्या में ही होवै है ।

मृगशीर्षाद्या गर्भा मन्द फलाः पौष शुक्ल जाताश्च ।
पौषस्य कृष्ण पक्षेण निर्दिशेच्छ्रावणस्य सितम ॥

मिगसर रे शुरू में और पो रे उजाळे पाख रो गर्भ मामूली फल देणोवाळो होवै है । पो रे उजाळै पाख में पड़ै गर्भ रो फल सावण रे उजाळै पाख में बताणो चाइजै ।

माघसितोत्था गर्भाः श्रावणकृष्णे प्रसूति मायान्ति ।
माघस्य कृष्ण पक्षेण निर्दिशेत् भाद्रपद शुक्लम ॥

माह मास रे उजाळै पाख रो गर्भ सावण रे अंधारे पाख में और माह रे अंधारे पाख रो गर्भ भादवे रे उजाळै पाख में जन्म देवै है ।

फाल्गुनशुक्ल संमुत्था भाद्रपदस्यसिते विनिर्देश्याः ।
तस्यैव कृष्ण पक्षोद्या वास्तु ये तेऽश्वयुक शुक्ले ॥

फागण मास रे उजाळे पाख रो गर्भ भादवे अंधारे पाख में और अंधारे पाख रे गर्भ रो जन्म आसोज रे उजाळे पाख में बताणो जोईजे ।

चैत्रसित पक्ष जाताः कृष्णेऽश्व युजस्य वारिदा गर्भा ।
चैत्रासित संभूताः कार्तिक शुक्लेऽभि वर्षन्ति ॥

चैत रे उजाळे पाख रो गर्भ आसोज रे अंधारे पाख में जळ देवे है और चैत रे अंधारे पाख रो काती रे अंधारे पाख में वर्षा करे है—

पौषे समार्गशीर्षे सन्ध्या रागोऽम्बुदाः सपरिवेषाः ।
नात्यर्थं मृगशीर्षे शीतं पौषेऽति हिमपातः ॥

मिगसर और पो में संज्या री लाली लोयां चक्करदार बादल होवे तो मिगसर में घणी ठंड और पो में पाळो पड़ने से गर्भ पक्को को होवे नी ।

माघे प्रबलो वायुस्तुषारकलुषघुती रविशशाङ्कौ ।
अतिशीतं सघनस्य च भानोर स्तोदयौ धन्यौ ॥

माह रे महीने में जदि जोररी हवा चाले, सूरज-चांद

री किरणां (तुषार) रे समान मलीन चमकवाली और घणी ठंडी होवै तो बादलां रै साथे सूरज रो उगणो और छिपणो जरूरी है।

भद्रपदा द्वयविश्वाम्बुदेव पैतामहेप्वथर्क्षेपु ।
सर्वेष्वृतुपु विवृद्धो गर्भो बहुतोयदो भवति ॥

पूर्व भाद्रपद, उत्तर भाद्रपद, पूर्वाषाढ और उत्तराषाढ और रोहिणी नखतरों में बढ़ेड़ा गर्भ घणो पाणी बरसावै।

शतभिगाश्लेपार्द्रास्वाति मघासंयुतः शुभो गर्भः ।
पुष्णाति बहून्दिवसान हन्त्युत्पातैर्हतास्त्रिविधैः ॥

शतभिषा, आश्लेषा, आर्द्रा, स्वाति और मघा मिले हुये, गर्भ शुभ होवे है और घणा दिना तांई पाणी बरसाता रहवै है। पण—तीन उत्पातों हूं बपोड़ा होवै तो घाटो घाले।

मृग मासादिष्वष्टौपट् षोड़श विंशतिश्चतुर्युक्ता ।
विंशतिरथ दिवस त्रयमेकतमर्क्षेण पञ्चभ्यः ॥

जद चांद आं पांच नखतरां में हूं किणी एक में आज्यावे तो मिगसर हूं बैसाख तांई छः महीना में क्रम हूं

८, ६, १६, २४, २० और ३ दिनों तांई लगातार मेह वरसा करे है।

गर्भ समयेऽति वृष्टि गर्भा भावाय निर्निमित्तकृता।
द्रोणाष्टांशेऽभ्यधिके वृष्टेगर्भ स्नुतो भवति॥

जदि गर्भ रे टायम में ही बिना कारण ही घणो मेह बरसे तो गर्भ को रहवे नी और तोळे रे आठवें भाग जतो ही पाणी वरस ज्याय तो पड़ेड़ो गर्भ भी नष्ट हो ज्यावे है।

पवन सलिल विद्युद्गर्जिताभ्रान्वितो यः
स भवति बहुतोयः पञ्चरूपाभ्युपेतः
विसृजति यदि तोयं गर्भ कालेऽति भूरि,
प्रसव समय मित्वा शीकराम्भः करोति॥

हवा, पाणी, विजळी, गर्जन और बादल इत्यादि इण पांच कारणों सहित रहा गर्भ घणो पाणी वरसावे। जदि गर्भ रे समय में घणो मेह बरसे तो जन्म रे पछै जलकणां री वर्षा होवे।

मेह सम्बन्धी इण जानकारी और इयरे पाछै जो और अणमव हुया बां सारां न भेळा कर र खेतीखड़ां

आपरी-बोल चाल री भाषा में कहावता बणाली। आ बड़ी ही अचरज री बात है कि खेतीखड़ां अः कहावतां बणावता वखत किणी कवि री मदद को लीनी नी। खेतीखड़ां मेह सम्बन्धी जानकारी नै आच्छी तरह समझी और बीनै बताणे में भी घणी जोगता दिखाई। खाली मेह री जानकारी ही नहीं खेती सम्बन्धी दूसरी सारी बातां भी यां छोटी-छोटी तुकबंदियां में गूंथ ली। जकी कहावत या ओखणा कहावै है।

मेह-सम्बन्धी खेतीखड़ां री जानकारी घणी काम री है। वे पो, माह रे महीना हूं ही आगले साल में बरसणे वाळे मेह री बातां पहले हूं ही बताण लागज्यावें है और चौमासे में भी आभे रे रंग, हवा री चाल, कीड़ी, चिड़ी, बकरी, स्याल, कुत्ता, मेंढक, सांप, किरड़ो आदि जीवां रे शरीर सम्बन्धी रंग-ढंग देख र ही वे समझ जावे है कि मेह बरससी या को बरसे नी।

सूरज-चांद री नखतरां में आणे सम्बन्धी ज्योतिष री जानकारी भी अठै देणी घणी काम री है। जिके हूं मेह सम्बन्धी जानकारी री कहावतां री मतलब समझण में घणी मदद मिलसी।

हर एक राशि में नो चरण और प्रत्येक नखतर में

चार चरण होवे है। सूरज न एक नखतर हूं दूसरे नखतर तांई जाणे में लगमग चवदह दिन लागे है।

सन् १९७३ में सूरज और चांद, राशियों तथा नखतरों में कब आये इयेरी सारिणियां नीचे दियेड़ी है :—

राशियां	सूरज कद आयो	चांद कुण से नखतर पर हो
१. धन	१५-१२-७२	रेवती
२. मकर	१४-१-७३	कृतिका
३. कुंभ	१२-२-७३	मृगशिरा
४. मीन	१४-३-७३	पुनर्वसु
५. मेष	११-४-७३	पुष्य
६. वृषभ	१४-५-७३	चित्रा
७. मिथुन	१४-६-७३	अनुराधा
८. कर्क	१६-७-७३	उत्तराषाढा
९. सिंह	१६-८-७३	पूर्वा भाद्रपद
१०. कन्या	१६-९-७३	भरणी
११. तुला	१७-१०-७३	मृगशिरा
१२. वृश्चिक	१६-११-७३	पुष्य

सारिणी २—नखतरां मे आगो

नखतर	दिनांक
१. मूल	१५-१२-७२
२. पूर्वाषाढा	१८-१२-७२
३. उत्तराषाढा	१०-१-७३
४. श्रवण	२३-१-७३
५. धनिष्ठा	५-२-७३
६. सतभीखा	१८-२-७३
७. पूर्वा भाद्रपद	४-३-७३
८. उत्तरा भाद्रपद	१७-३-७३
९. रेवती	३०-३-७३
१०. अश्वनि	११-४-७३
११. भरणी	२६-४-७३
१२. कृतिका	१०-५-७३
१३. रोहिणी	२४-५-७३
१४. मृगशिरा	७-६-७३
१५. आर्द्रा	२१-६-७३
१६. पुनर्वसु	५-७-७३
१७. पुष्य	१९-७-७३
१८. अश्लेखा	२-८-७३

१६.	मघा	१६-८-७३
२०.	पूर्वा फाल्गुनी	३०-८-७३
२१.	उत्तरा फाल्गुनी	१४-६-७३
२२.	हस्त	२६-६-७३
२३.	चित्रा	१०-१०-७३
२४.	स्वाति	२३-१०-७३
२५.	विशाखा	७-११-७३
२६.	अनुराधा	१६-११-७३
२७.	जेष्ठा	२-१२-७३

सूरज रो मार्ग १२ भागों में वांटेड़ो है, जिका राशि रे नाम हूं जाणीजे है। इण राशियां ने सत्ताइस भागों में बांटी है जिकां न नखतर कहवे है।

आकाश में रहणो वाला नखतरा रो जमीन पर कींया ओर किस्यो प्रभाव पड़ै है, इयरो कोई भी सही जबाव दे को सकैनी। खाली चांद रे बारे में ओ देखणो में आयो है कि उजाळे पाख में काटेड़ा बांस एवं लकड़ी बेगी ही सुळन लाग ज्यावै है। इये कारण खेतीखड़ बानै अंधारे पाख में ही काटै है। ज्यादा समझदारां रो ओ मत है कि जद सूरज एक नखतर हूं दूसरे नखतर पर जावै उण समय जमी रै हवा रै घेरे में थोड़ी घणी उथल-पुथल जरूर होवै है।

बहुत पहले समय सूं ही लोगां में ओ विश्वास चालतो आ रह्यो है कि पो और माह रै महीने में मेहरो ठहरने वालो गर्भ १६५ दिना पछै जन्मे है। याने बरसण लागै है। आ बात भी कयै है कि मिगसर या पो रै उजाले पाख में जदि गर्भ ठहरै है उणरो साढे छः महीना पछै जदि जन्म होवै है तो उणरी संतान कमजोर होसी याने बरसा बहुत कम होसी।

मेह रे गर्भ रा पांच कारण होवै हैः—हवा, वर्षा, बिजली, गर्जन और बादल। गर्भ रै समय अः पांचों कारण मौजूद होवै तो मेह घणे दायरे में होवै है।

अठै बारह महीनां में मेह रा लक्षण और फल कहा-वतां रे मुताबिक छोटे रूप में दिया जावै है।

मास	तिथि	लक्षण	फल
काती	सुदी ११	बादल और बिजली होवै	तो आषाढ में आछी वर्षा होवै
	१२	बादल गरजै	सारै चौमासे चोखो मेह बरसे
	१५	कृतिका नखतर में बादल और बजली	" " "
मिगसर	बदी ८	बादल दिखाई पड़ै और बिजली चमकै	पूरै सावण में मेह बरसै
	बदी या सुदी	सवेरे धंवर आवै	जमानो आछो होवै ।
पो	बदी १०	मेह बरसै	सावण रे अंधारे पाखरी १० नै मेह बरसै
	७	मेह बरसै कोणी	आर्द्रा नखतर में मेह बरसेला ।
	७	बादल हो पण मेह न बरसै	सावण री पूर्णमासी न मेह जरूर बरसेला
	१०	बादल हो बिजली चमकै	सारे भादवे मेह बरसेला
	१३	चारों ओर बादल छांयेड़ा होवै	सावण री पूर्णमासी और अमावस्या न जोर-रो मेह बरससी

मास	तिथि	लक्षण	फल
पो	अमावस	चारो कानी हूं हवा चालै	चोमासे में जोर रो मेह वरसेला ।
	सुदो ७	वादल गरजै, विजलीचमकै	
	८, ६	हवा चालै और मेह वरसै	तो सारा काम पूरा होवै ।
माह	वदो ७	वादल विजली होवै	सारे चोमासे मेह वरसतो रहवै ।
	" ६	मूल नक्षतर होवै ।	मादवे री ६ ने मेह वरसे
	अमावस	वादल, बिजली, हवा, मेह	मादवे री पूर्णमासी ने चार पहर मेह वरसे ।
	सुदी १	वादल और हवा	तेल और घी मंहगो होसी ।
	२	वादल, विजली	अनाज मंहगो होसी ।
	३	" "	गेहूं, जो मंहगा ।
	४	वादल और मेह	पान और नारियल मंहगा ।
	५	उत्तरादी हवा चालै	सारो भादवो सूखो रहवै ।
	६	वादल गाजै नहीं	रूई मंहगी होसी ।
	७	आकाश साफ होवै	मयारी हो आशा मत करो ।

मास	तिथि	लक्षण	फल
माह	सुदी ७	बादल-मेह	आषाढ में लूंठी बरसा होवै।
	७	बादल, मेह, सरदी	सारे चौमासे वर्षा होवै।
	७-८	बादल	आषाढ में मेह।
	९	बादलां रो घेर घार	भादवै में तालावां रै ऊपर हूं पाणी बहसी
	९	बादल न हो	तालाब भी सूख जासी।
	पूर्णमासी	चांद साफ दिखाई पड़ै	दुरभख काल पड़ै।
फागण	सुदी २	बादल हो पण बिजली न हो	सावण भादवै में मेह बरसै।
	७, ८, ९	बादल, बिजली, हवा, वर्षा	भादवै री अमावस नै मेह बरसै।
चैत	सुदी ८	आकाश हूं रेत बरसै	जिधर बिजली चमकै उस दिशा में अकाल पड़ैला।
	९	पानी बरसै	वर्षा रो गर्भ गळ जाय।
	१०	बादल, बिजली	चौमासे भर मेह बरसे

मास	तिथि	लक्षण	फल
आषाढ	सुदी १०	मंगल या रोहिणी हो	जमानो होसी।
		बुध उगने लाग जाय	दुरमख काल।
		सावण में शुकासन होवै	आछो मेह वरसै।
	सुदी ५	जोर से गाजे	आछो मेह वरसै।
	६	चांद बादळां हूं ढकोजेड़ो होवे	आनंद होसी
	महीने में	चित्रा, स्वाती, विशाखा में मेह वरसे	अकाल पड़सी।
	पूर्णमासी	चांद पर बादल होवै	सब सुखी रहसी।
		चांद साफ होवै	काळ पड़सी।
		बादल गाजै, बिजली चमकै, मेह वरसे	जमानो होसी।
	वदी ८	चांद बादळां में हूं निकले	साढे तीन महीना मेह बरससी।
	६	रविवार होवै	काळ पड़सी।

९ रविवार होवे

मास	तिथि	लक्षण	फल
आषाढ	बदी ९	मंगलवार होवे	जमी घूजसी ।
	”	बुधवार होवे	माव एकसा रहसी ।
	”	सोम, शुक्र या गुरुवार होवे ।	पृथ्वी आनन्द हूं भरेड़ी रहसी ।
	सुदी ९	घणा बादळ होवे और बिजली चमके	धापर खेती करो ।
	९	न तो बादल ही होवे और न बिजळी ही दिखाई पड़ै	खेती मत करो । हळ वाळदो ।
	१५	अगूणी, उत्तरादी, ईशाण कोणें री हवा चाले	समो होवे ।
		अगणी दिखणादी कूंट री हवा चाले	कुसमो रहसी
		दिखनादी, आथूणी कूंट	

मास	तिथि	लक्षण	फल
		री हवा चाले	एक बूंद भी को बरसेनी।
आषाढ	सुदी १५	उत्तरादी और आथूणी फूंट री हवा चाले	ऊंदरा और सांप घणा होसी।
	"	अगूणी हवा चाले (परवाई)	अनाज घणो होसी।
	"	दिखणादी हवा चाले	मेह घणो बरस सी।
	"	उत्तरादी हवा चाले	धन धान री उपज घणी होसी।
	"	आथूणी हवा चाले	समो होसी पण पाळो पड़सी।
सावण	बदी ४	मेह बरसे	उपज सवाई होसी।
	१०	रोहिणी हो	उपज कम होसी।
	११	" "	समो होसी।
	११	आधी रात में बादल गाजे	कुसमो होसी।
	११	कृतिका होवे	अनाज रो भाव साधारण रहसी।
	"	रोहिणी होवे	समो होसी।
	"	मृगशिर होवे	जरूर काळ पड़सी।

मास	तिथि	लक्षण	फल
सावण	सुदी ७	सूरज बादळां हूँ ढकीजेड़ो उगे	देवठणी ग्यारस तांई मेह बरसे ।
	बदी १	उगतो सूरज दिखाई न पड़े	सारो चौमासो वरसे ।
	५	जोर री हवा चाले	मेह को बरसे नीं ।
	महीने भर	आथूणी हवा चाले	समो होसी ।
	सुदी ७	आधी रात रो बरसे	मेह को होवेनी ।
	अंधारो पाख में	तिथि टूटेड़ी होवे	इस्यो काळ पड़सी कि मां बेटे ने वेच देसी ।
भादवो	महीने भर	जितरा दिनां आथूणी हवा चालसी	उतरादी दिनां में माह में पाळो पड़सी ।
	बदी ११	सारे दिन बादल मंडेड़ा रहवे	सारे चौमासे मेह वरसे कोनी ।
आसोज	अमावस	शनिवार होवे	बखत आछो को होवे नी ।

अह तमाम वातां पुराणे जमाने रे अणभवां रै आधार पर वणेड़ी है। पण अब जमानो आयग्यो ऑटम और हाईड्रोजन रै बमा रो। आं बमां रै परीक्षण हूँ पृथ्वी रो वायुमंडल घणो खराब होतो रहवै है। इये कारण हूं वर्षा रै बारे में वणेड़ी कहावतां अबार घणी सही को उतर सकेनी। क्योंकि किणी घणैं अणभवी माणस ने आ बात पहलै ही कहदी ही कि "समय रै फेर हूं सुमेर होय माटी रो।" फेर भी अह अणभव भरी वातां और कहावतां घणैं कामरी है। क्यूंकि घणां स्याणां मिनखां कह्यो है कि—'सुगन सरोधा और गुरु रा बाचा। कई कूड़ा और कई साचा।'

मेह सम्बन्धी सारी जानकारी पर छंद-रचना भड्डरी री बताई जावे है। पण भड्डरी कुण हो, कठै जनम्यो और कद जनम्यो इये रो ठीक पतो आजतांई को चाल्यो नी।

सुण में आवै है कि काशी हूँ कोई एक पंडित इस्यो एक मुहर्त शोधर घर कानी चाल्यो जिके में गर्भ रहणे हूं घणो पढ्यो-लिख्यो बेटो जन्मतो। पण घर तांई पहुँच को सक्योनी और मजबूर होयर मारग में ही संज्या हो ज्याने रे कारण हूं एक अहीर रे घरे टहरणो पड़्यो। आ बात भी कहवे है कि वो एक गडरिये रे घरे ठहरचा हा।

रसोई बणाती वेळां उणने उदास देखर अहीरणी उणरी उदासी री कारण पूछ्यो और उणरे मन रो भेद जाणर खुद नै उण सूं बेटे री कामना करी। उसी रै फल-स्वरूप भड्डरी रो जन्म हुयो। अतः बामण बाप और अहीरिन मां से भड्डरी रो जन्म हुयो।

उत्तर प्रदेश में भड्डरी रे नाम पर भडरिया नाम की एक जात भी मिले है। इं जात रा लोग मेंह सम्बन्धी कहावतां रे सहारे हूं मेंह रो भविष्य बताया करे है। इं जात रा लोग गोरखपुर जिले में घणा मिले है।

राजस्थान में भड्डरी नाम री एक महिला सुणने में आवै है, जिण रे पति रो नाम डंक हो। भड्डरी भंगण और डंक बामण हो। बांरी ओलाद डाकोत हुई।

एक बात आ भी सुणने में आवे है कि भड्डरी सुप्रसिद्ध ज्योतषी बराहमिहिर रो बेटो हो, जिको ऊपर लिखी बात रे मुताबिक एक गड़रिन रे गर्भ हूं जनम्यो हो।

भाषा ने देखते हुये तो भड्डरी बराहमिहिर रे जमाने रो कोनी जानपड़े। आ बात कहणो भी कठिन है कि वो राजस्थान रो हो, या उत्तर प्रदेश रो या बिहार रो हो। क्योंकि भड्डरी री कहावतां मारवाड़ी बोली में भी मिले है और पूर्वी हिन्दी में भी। उण में बातां तो करीब-करीब

जिके में लाखों हाथी मारया जासी या अकाल पड़सी।

चित्रा दीपक चेतवैं, स्वाते गोवर्धन्न।
डंक कहे हे भड्डली, अथग नीपजे अन्न।

जदि दीवाली चित्रा नखतर में और दूसरे दिन गोरधन पूजा स्याती नखतर में होवें तो अनाज घणो होसी।

—मिगसर—

मिगसर वदी आठैं घन दरसे।
सो मेघा भरि सावन बरसै॥

मिगसर बदी आठ्युं न बादल दिखाई देवें। तो वे बादल सारे सावण रे महीने मेह बरसासी।

मार्ग महीना मांहि जो, ज्येष्ठा तपे न मूर।
तो इमि बोले भड्डरी, निपजे सातो तूर॥
(उत्तर प्रदेश)

मिगसर रे महीने में जदि न तो जेष्ठा नखतर तपै और न ही मूल तो सातों तरह रा अन्न (गेहूँ, जो, चना, मटर, अरहर, धान और उड़द) घणा उपजसी।

मार्ग वदी आठें घटा, विज्जु समेती जोड़।
तो सावण बरसे भलो, साख सवाई होय॥

मिगसर वदी आठयूं न बिजली रे साथे बादळ होवे तो सावण रे महीने में आछो मेह बरसेला ।

मिगसर वद वा सुद मंही आधे पो उरे ।
धंवरा धुंध मचायदे, तो समो होय सरे ॥

मिगसर रे अंधारे पाख में या उजाले पाख में आधे पो हूं पहिले पहिले जदि धंवर या घणा बादल सवेरे सवेरे आज्यावे तो आगलो जमानो आछो होसी ।

मिगसर वद वा सुद मंही आधे पो उरे ।
धंवर न भीजे धूल तो, करसण काह करे ।

मिगसर बदी या सुदी तथा आधे पो हूं पहिले जदि जमीन ओस या धंवर हूं भीजे नहीं तो खेती करणी बेकार है अर्थात् जमानो आछो को होवेनी ।

–पो–

पूस मास दसमी अंधियारी ।
बदरी होय घोर अंधियारी ॥
सावन वदि दसमी के दिवसै ।
भरिकै मेघ अधिक बरसै ॥

(उत्तर प्रदेश)

जदि पो वदी दस्युं रे दिन बादळ होवे और घणो अंधेरो छा जावै तो सावण बदी दस्युं ने जोर रो मेह बरसै।

पोष अंधारी सत्तमी, जो पानी नहिं देइ।
तो आद्रा बरसै सही, जल थल एक करइ॥
(उत्तर प्रदेश)

पो वदी सात्युं न जदि मेह न बरसै तो आर्द्रा नखत्तर में मेह जरूर बरसेला और जल-थल एक कर देला।

पोष अंध्यारी सत्तमी, बिन जळ बादळ जोय।
सावन सुदि पूनो दिवस, वरषा अवसिहिं होय॥
(उत्तर प्रदेश)

पो वदी सात्युं रै दिन बादळ तो होवे। पण बरसै नहीं तो सावण सुद पूर्णमासी रे दिन जरूर मेह बरसेला।

पोष बदी दसमी दिवस, बादल चमकै बीज।
तो बरसै भर भादवां साधो खेलो तीज॥

पो वदी दसमी रै दिन में बादळां में बिजली चमकै तो सारे भादवे आछी वरसा होसी। तीज रो त्यौहार आनन्द रै साथे मनाओ।

पौप अंध्यारी तेरसै, चहुँ दिस बादळ होय।
सावण पूनो मावसै, जळधर अति ही होय॥

जदि पो वदी तेरस रे दिन च्यारूं मेर वादल दिखाई पड़े तो सावण महीने री अमावस और पूर्णिमा न जोर रो मेह बरसेला।

पूस अमावस मूल को सरसै चारूं बाय।
निश्चय बांधो झोंपड़ो, वर्षा होय सिवाय॥

पो रे महीने री अमावस को जदि मूळ नखतर पड़ जाय और चारों ओर से हवा बाजण लाग ज्याय तो झोंपड़ो बणाल्यो—मेह घणो ही बरससी।

सनि आदित औ मंगलो, पोष अमावस होय।
दुगनो तिगुनो चौगुनो, नाज महंगो होय॥

पो री अमावस ने जदि सनिवार, रविवार या मंगलवार पड़ज्याय तो इये ही क्रम हूँनाज दुगनो, तिगुनो और चोगुनो महंगो होसी।

सोमां, सुकरां सुरगुरां, पौष अमावस होय।
घर घर बजे बधावड़ा, दुखी न दीखे कोय॥

पो री अमावस न जदि सोमवार, बृहस्पतिवार या शुक्रवार पड़ज्याय तो घर-घर बधाइ बाजेली और एक ही मिनख दु:खी को रहवेनो।

पूस उजालो सप्तमी, आठैं नवमी गाज।
गर्भ होय तो जान लै, अब सरि हैं सब काज॥

पो रे उजाले पाख री सात्युं, आठ्युं और नोम्युं न बादळ होवे तो समझलो अब सारा काम सर ज्यासी।

काहे पंडित पढि-पढि मरो।
पूस अमावस की सुधि करो॥
मूल विशाखा पूरवापाढ।
झूरा जान तो बाहिरे ठाढ॥

पंडित जी पढ-पढ र क्यूं दुख पाओ हो। पो रे महीने री अमावस ने देखो। जदि उण दिन मूळ, विशाखा या पूर्वापाढ नखतर पड़ता हो तो समझना कि काळ फळसे रे आगे खड़्यो है। अर्थात् काळ पड़सी।

—माह—

माघ अंधेरी सप्तमी, मेह बिज्जू दमकंत।
मास चार बरसे सही, मत सोचे तू कंत॥

माह महीने रे अंधारे पाख री सातयुं न जदि बादळ हो और बिजली चमके तो हे स्वामी चिंता करनी छोड़ दयो। चार मास लगातार मेह बरसेला।

नौमी माघ अंधेरिया, मूल रिच्छ को भेद।
तौ भादौं नौमी दिवस, जल बरसै बिन खेद॥

माह बदी नौम्युं न जदि मूल नखतर होवे तो भादवा नवमी को मेह जरूर बरसेगा।

माघ अमावस गर्भमय, जो केहु भांति विचारि।
भादौं की पुन्यो दिवस, बरखा पहर जु चारि॥

माह री अमावस न बादल, बिजळी, हवा आदि होवे तो भादवे की पूर्णमासी रे दिन च्यार पहर तांई मेह बरसेला।

माघ जो परिवा ऊजली, बादर वायु जु होय।
तेल और सुरही सबै, दिन दिन महंगो होय॥

माह महीने रे उजले पाख री एकम रे दिन बादल हो और हवा चाले तो तेल और घी महंगे होते जायंगे।

माघ उज्यारी दूज दिन, बादळ विज्जु समाय।
तो भाखै यों भड्डरी, अन्न जु महंगो होय॥

माह वदी सातुं श्रौर आठयुं रे दिन वादळ होवे तो आसाढ में मेह् वरसेला।

माघ सुदी जो सत्तमी, भोमवार की होय।
तो भड्डर जोशी कहे, नाज किरानो लोय॥

माह् सुदी सातुं जदि मंगलवारो होवे, तो अनाज में कीड़े पड़ जायला।

माघ सुदी आठें दिवस, जो कृतिका रिख होय।
की फागण रोली पड़ै, की सावण महगो होय॥

माह् सुदी आठयुं रें दिन जदि कृतिका नखतर पड़ जाय तो या तो फागण में पाळो पड़सी या सावण में महंगाई बढसी।

अथवा नौमी उजळी, वादळ करै वियाळ।
भादों में वरसै घणो, सरवर फूटै पाळ॥

माह् सुदी नौमी रे दिन जदि घटा ऊमटे तो भादवे में इतरो मेह् वरससी कि तालाबां री पाळां टूट ज्यासी।

अथवा नौमी निर्मली, वादळ रेख न जोय।
तो सरवर भी सूखसी, महि में जळ नहीं होय॥

माह् सुदी नवमी रे दिन बादळ दिखाई न पड़ै

तो आगली साल तालाव मी सूख ज्यासी और मेह बरसे नहीं।

माघ सुदी पूनो दिवस, चंद निर्मलो जोय।
पशु वेचो कण संग्रहो, काल हलाहल होय ॥

माह सुदी पूर्णिमा न जदि चांद साफ दिखाई पड़े तो पशु बेच दयो अनाज भेळो करो। क्युं कि दुरमख काळ पड़ेला।

माघ माह में पड़ै न सीत।
महंगो नाज जानियो मीत ॥

जदि माह रे महीने में सी न पड़े तो मित्र अनाज महंगा हो ज्यायगा।

माघ पांच जो हों रविवार।
तो भी जोशी करो विचार ॥

माह रें महीने में जदि पांच दीतवार पड़ज्याय तो भी सोच री वात है। कारण अः शुकन भला कोनी।

—फागण—

फागण वदी सु दूजदिन, वादळ होय न वीज।
वरसे सावण भादवो, सावो खेलो तीज ॥

फागण वदी दूज रे दिन बादल तो मंडै पण विजळी नहीं चमके, सावण भादवे में मेह बरससी । आनंद रे साथ तीज का त्योहार मनाओ ।

मंगळ वारी मावसी, फागण चैती जोय ।
पशु बेचो कण संग्रहो, अवसि दुकालो होय ॥

फागण और चैत री अमावसां मंगलवारी होवे तो पशुओं को वेचदयो और धान जमा करो । क्युं कि अह अहनाण काळ रा है ।

फागण सुदी जु सत्तमी, आठैं, नोमी गंभ ।
देख अमावस भादवें, पैयें मेह सुलंभ ॥

फागण सुदी सात्युं, आठ्युं या नौम्युं रे दिन जदि मेह रो गर्भ ठहरे तो भादवे री अमावस रे दिन मेह बरसेला ।

पांच मंगरो फागुणो, पूस पांच सनि होय ।
काल पड़ै तब भड्डरी, वीज बओ जनि कोय ॥

जदि फागण में पांच मंगलवार और पो में पांच शनिवार पड़ ज्याय तो कोई भी हळ मत जोतो क्योंकि काळ पड़सी ।

होली सूक सनीचरी, मंगल वारो होय।
चाक चहोड़े मेदनी, विरला जीवे कोय॥

जदि होळी शुक्र, शनि या मंगलवारो होवे तो धरती पर जोर रो वखेड़ो होसी और शायद ही कोई जीवतो रहवे।

–चैत–

चैत अमावस जै घड़ी, चलतु पत्रा माय।
तेता सेरा भड्डरी, कातिक धान विकाय॥

चैत री अमावस चलु पतड़े में जितो घड़ी री होसी, काती में धान विता ही सेरां रो विकसी।

चैत सुदी रेंवती जोय।
वैशाखहिं भरनी जो होय॥
जेठ मास मृगसर दरसंत।
पुनरवसु आसाढ चरंत॥
जितो नक्षत्र कि वरतो जाई।
तेतो सेर अनाज विकाई॥

चैत में रेंवती, बैसाख में भरणी, जेठ में मृगशिरा

चैत बदी आठ्युं और चवदस रे दिनां में जिण दिशा में बादळ मंडसी, उण दिशा में मेह बरसेला। पण जिण दिशा में आकाश साफ रहेला उण दिशा में आंध्या चालेलो।

चैत मास उजियारो पाख।
नो दिन बीज लुकोई रखा॥
आठम नम नीरत कर जाय।
जहां बरसे वहां दुरभख थाय॥

चैत सुदी एकम से नवमी तांई जदि बिजली चमके नहीं। खास तोर से आठ्युं और नवमी रे दिनां ने देखणो चाइजै। इण दिनां में जठै-जठै मेह बरसेला बठै बठै दुरभख काळ पड़ेला।

असनी गळियां अंत विनासै।
गली रेवती जल को नासै॥
भरनी नासै तृना सहूतो।
कृतिका बरसै अंत बहूतो॥

चैत रे महीने में जदि अश्विनी नखतर बरस जाय तो चोमासे रे अंत में मेह को बरसेनी। रेवती नखतर बरस

जाय तो चोमासे में मेह बरसेला ही नहीं। भरणी नखतर बरस जाय तो चोमासे में तिणो ही को होवे नी और जदि कृतिका नखतर बरस जाय तो आखिर में चोखो मेह बरसे।

चेत मास में पख अंधियारा।
आठम, चौदस दो दिन सारा॥

जेही दिस बादळ तेहि दिस मेहा।
जेहि दिस निरमल तेही दिस खेहा॥

चैत रे अंधारे पाख री आठ्यु' और चौदस रे दिन जिण दिसा में बादल मंडसी उणी दिसा में चोमासे में मेह बरससी। जिण दिशा में आकाश साफ रहसी उण दिशा में खेह उडसी।

—बैसाख—

बैशाखी सुदि प्रथम दिन, बादळ विज्जु करेइ।
दामा बिना बिसाहिजै, पूरी साख भरइ॥

बैसाख सुदी दूज रे दिन बादळ और बिजळी होवै तो ऐड़ो चोखो समो होसी कि धान बिना पीसां मिलसी।

पहली पड़वा गाजै तो दिन वहोतर वाजै ।

आसाढ वदी एकम रे दिन वादल गाजै तो वहोतर दिना तांई लगातार आंधियां चाल तो रहे ।

कृष्ण असाढी प्रतिपदा, जो उत्तर गरजंत ।
छत्री-छत्री जूझिया, निहचे काल पडंत ॥

आसाढ वदी एकम रे दिन जदि उत्तर दिसा में वादळ गाजै तो राजाओं में झगड़ा होगा और जरूर काळ पड़ेला ।

धुर आसाढी विज्जु की, चमक निरंतर जोय ।
सोमा सिकरां सुरगुरां, तो भारी जल होय ॥

आसाढ वदी में जदि सोमवार, शुक्रवार और गुरुवार न लगातार विजळी चमकती रहे तो भारी वरसा होवेला ।

धुर असाढ की पंचमी, वादळ होय न बीज ।
वेचो गाडी वळदियां, निपजै कछू न चीज ॥

आसाढ वदी पांच्यूं रे दिन जदि न तो वादळ ही होवे और नहीं विजली चमकती दीखे तो गाड़ी ओर वळदां न वेच दयो । कोई सो ही धान नीपजेला नहीं ।

धुर असाढ री अष्टमी, ससि निर्मलियो दीख ।
पीव जाय के मालवे, मांगत फिरि हैं भीख ॥

आसाढ बदी आठ्यू रे दिन जदि चांद साफ दिखाई पड़ै तो मेह नहीं बरसेला । हे स्वामी माळवे में जायर भीख मांगनी पड़ेली ।

नवें असाढी बादळी, जो गरजै घनघोर ।
कहे भड्डरी ज्योतिषी, काळ पड़ै चहुँ ओर ॥

असाढ बदी नवमी रे दिन जदि बादळी हो और जोर हूं गाजै तो चारू ओर काळ पड़ेला ।

दसैं असाढी कृष्ण को, मंगल रोहिनी होय ।
सस्ता धान बिकाइ है, हाथ न छुइ है कोय ॥

आसाढ बदी दस्यु रे दिन जदि मंगलवार और रोहिणी नखतर पड़जाय तो अनाज इतरो सस्तो हो ज्यासी कि लोग हाथ हो को लगावे नी ।

सुदि असाढ में बुद्ध को, उदै भयो जो देख ।
सुक्र अस्त सावन लखो, महाकाल अवरेख ॥

आसाढ बदी में जदि बुद्ध उगण लागज्याय और

सावण में शुक्र छिप जाय तो दुरभख काळ रा अहनाण है।

सुदि असाढ की पंचमी, गरज धमधमो होय।
तो यों जानो भड्डरी, मधुर मेघा जोय॥

आसाढ सुदी पांच्यु रे दिन बादळ गाजै तो मेह आछो बरसेला।

सुदि असाढ नौमी दिना, बादर झीनो चंद।
तो यों जानो भड्डरी, भूमि घणो आनंद॥

आसाढ सुदी नवमी रे दिन जदि चांद पर पतली बादळां री चादर छायेड़ो होवे तो धरती पर घणो आनंद रहसी।

चित्रा स्वाति विसाखड़ो जो बरसे असाढ।
चालौ नरां विदेसड़े, परि है काल सुगाढ॥

जदि आसाढ में चित्रा स्वाती और विशाखा नखतरों में मेह बरसे तो काळ पड़ेला और मिनखां ने परदेशां जाणो पड़सी।

आसाढ़ी पूनो दिना, बादळ भीनो चंद।
तो भड्डर जोशी कहे, सगळा नरा अनंद॥

आसाढ री पूनम रे दिन जदि चांद बादळा हूं ढकी

जेड़ो होवे तो सारा मिनख आनंद हूं रहसी । अर्थात् चोखो समो होसी ।

आसाढी पूनम दिना, निर्मल उगै चंद ।
पीया जा ओ तुम मालवा, अटूठै छै दुःख द्वन्द ॥

जदि आसाढ री पूनम रे दिन चांद बिलकुल साफ दिखाई पड़े तो हे पिया तुम माळवा चले जाओ अठै तो दुःख हूं झगड़ो करणो पड़सी । क्योंकि काळ पड़ेला ।

आसाढी पूनम दिना, गाज, बीज बरसंत ।
नासै लच्छन कालका, आनंद मानो संत ॥

आसाढ री पूनम रे दिन जदि गाजे, बिजली खीवें और मेह बरसे तो आछे समे रा लच्छण है । घणो आनंद रहसी ।

आगे रवि पीछै चलै, मंगल जो आसाढ ।
तो बरसै अनमोलही, पृथ्वी अनंदै बाढ ॥

आसाढ रे महीने में जदि रवि आगे और मंगळ पीछे चाले तो मेह घणो बरससी और धरती पर मिनख आनंद मनासी ।

आसाढी आठें अंधियारी।
जो निकले चंदा जलधारी॥
चंदा निकळे बादळ फोड़।
साढे तीन मास बरसा रो जोग॥

आसाढ बदी आठ्यूं रे दिन जदि चांद बादळां नै फाड़ कर उगै तो आगले साढे तीन महीना तांई मेह बरससी।

आगे मंगल पीछे रवि, जो असाढ के मास।
चोपट नासै चहुँ दिसा, बिरलै जीवन आस॥

जदि आसाढ रे महीने में मंगल आगे हो सूरज पीछे तो च्यारूंमेर पशुमरेला और शायद कोई भी जीवतो न रहे।

न गिनु तीन सै साठ दिन, ना करु लग्न विचार।
गिन नौमी आषाढ बदि, होवै कोनिउ बार॥
रवि अकाल मंगळ जग डगै।
बुधा समो सम भावो लगै॥

सोम शुक्र सुरगुरु जो होय ।
पुहुमी फूल फलंती जोय ॥

न तो साल रा तीन सौ साठ दिन गिणो और न ही लग्न देखो । आसाढ वदी नवमी रो ही विचार करो वह कुण से बार में पड़सी । जदि रविवार पड़ेला तो काळ पड़सी, मंगलवारी होसी तो धरती धूजेला, बुधवारी होसी तो भाव घटै-वदै कोनी, और सोमवारी, शुक्रवारी या गुरु-वारी पड़सी तो धरती धन-धान हूं भर ज्यासी ।

आसाढी धुर अष्टमी, चंद सवेरा छाय ।
चार मास चवता रहे, जिउ भांडै रे राय ॥

आसाढ वदी आंठ्य रे दिन चांद ने बादळ घेरेड़ो राखै तो च्यारू मास फूटेड़ी हांडी री तरह चूवता रहसी ।

आषाढै सुद नौमी, घन बादळ घन बीज ।
कोठा खेरे खंखेर दो, राखो बळद न बीज ॥

जदि आसाढ सुदी नवमी रे दिन घणा बादल होवे और बिजली खूब चमके, तो कोठा खाली करदयो । अर्थात् सब बीज बादयो । खाली बळद और बीज ही राखो । अर्थात् जमानो आछो होसी ।

आसाढे सुद नौमी, न बादळ न बीज ।
हळ फाड़ो इंधण करो, बैठे चाबो बीज ॥

आसाढ सुदी नवमी रे दिन न तो बादळ होवे न बिजळी ही दिखाई पड़े तो हळ न फाड़ र इंधण करल्यो और बैठ्या-बैठ्या बीज चाबो । अर्थात् काळ पड़सी ।

—सावण—

सावण पहिली चौथ में, जो मेघा बरसाय ।
तो भाखै यों भड्डरी, साख सवाई जाय ॥

सावण बदी चोथ रे दिन जदि मेह बरसे तो उपज सवाई होसी ।

सावण पहले पाख में, दसमी रोहिनी होइ ।
महंगा नाज अरु अल्प जळ, बिरला बिलसै कोइ ॥

सावण बदी दसमी रे दिन जदि रोहिणी नखतर पड़ज्याय तो अनाज महंगो होसी मेह थोड़ो-थोड़ो बरससं और सायद ही कोई सुखी होवे ।

सांवण वदी एकादसी, जेती रोहिणी होय ।
ते तो समयो ऊपजै, चिंता करो न कोय ॥

सावण बदी ग्यारस र दिन जिता घड़ी रोहिणी

नखतर रहसी उणो हिसाब हूं उपज होसी। विना मतल-
वरी चिंता मत करो।

सावण कृष्ण एकादसी, गरजि मेघ अधरात।
तुम जाओ पिया मालवा, हम जावें गुजरात॥

सावण वदी ग्यारस र दिन जदि आधी रात में बादळ गाजै तो काळ पड़सी। तुम तो स्वामी मालवे जाओ और मैं गुजरात जाऊंगी।

जो कृतिका तो फिर वरो, रोहिणी होय सुकाल।
जो मृगसिर आवै वहां, निहचै पड़े दुकाल॥

जदि सावण वदी बारस रे दिन कृतिका नखतर होवे तो अनाज रो भाव साधारण रहसी। रोहिणी नखतर होवे तो समो होसी और मृगशिर होवे तो जरूर काल पड़सी।

चित्रा स्वाति विसाखड़ी, सावण नहीं वरसंत।
हाली अन्नै संग्रहो, दूनों मोल करंत॥

जदि चित्रा स्वाती और विशाखा नखतर सांवण में बरसे नहीं तो अनाज का भाव दूणा होज्यायगा। वेगो ही अनाज भेळो करल्यो।

करक जु भीजै कांकरो, सिंह अभीनो जाय।
ऐसा बोले भड्डरी, टीड़ो फिर फिर खाय॥

जदि सावण में सूरज कर्क राशि पर होवे तो मेह कांकरा ही भोजेला। और सिंह राशि पर हो और वह भी सूखो जाय, तो टीडो जन्मेली और फिर-फिर फसल न खासी।

मीन सनीचर कर्क गुरु, जो तुल मंगल होय।
गेहूं गोरस गोरड़ी, विरला विलसै कोय॥

जदि मीन का शनिचर, कर्क का गुरुवार और तुला का मंगल हो तो, गेहूं, दूध और ऊख की फसल खराब हो ज्यासी। शायद ही इनसे कोई सुखी होवे।

कै जु सनीचर मीन को, कै जु तुला को होय।
राजा विग्रह प्रजा छय, विरला जीवै कोय॥

शनैश्चर मीन रो होवे या तुला रो, दोनों ही दशाओं में राजाओं में लड़ाई होसी। प्रजा रो नास होसी। शायद ही कोई बचसी।

स्रावण सुकला सप्तमी, छिपि के ऊगै भांन।
तव लग देव वरीसिहैं, जव लग देव उठान॥

यदि सावण वदी सातयुं रे दिन सूरज बादळा में लुक्येड़ो उगे तो देवउठणी ग्यारस तांई मेह बरसेला।

सावण केरे प्रथम दिन, उगत न दीखै भान।
चार महीना जळ गिरै, या को है परमान॥

सावण वदी पड़वा रे दिन जदि सूरज उगते समय दिखाई न पड़े तो जरूर ही च्यारों महीना मेह बरसेला।

सावण वदी एकादसी, बादळ उगै सूर।
तो यों भाखें भड्डरी, घर घर बाजै तूर॥

सावण वदी ग्यारस रे दिन जदि सूरज बादळों में उगे तो भड्डरी यूं कहता है कि घर घर आनंद के बाजे बाजेंगे।

सावण शुक्ला सत्तमी, चंदा छिटिक करे।
की जळ देखो कूप में, की कामिनि सीस धरे॥

सावण सुदी सातयुं रे दिन जदि चांद रो च्यानणो घणो आछो हुवे अर्थात् बादळ होवे ही नहीं तो पाणी या तो कुए में मिलेगा या पनिहारियां रे सिर पर धरे घड़ों में।

सावण पहली पंचमी, जोर की चले बयार।
तुम जाणा पिउ माळवे, हम जेवें पितु-सार॥

सावण वदी पंचमी रे दिन जोर की हवा चाले तो हे पति तुम तो मालवे चले जाओ और मैं पीहर चली जाऊंगी। अर्थात काळ पड़ेगा।

सावन कृष्ण पक्ष में देखो।
तुल को मंगल होय विसेखो॥
कर्क राशि पर गुरू जो जावै।
सिंह राशि में शुक्र सुहावै॥
ताल सो सोखै बरसै धूर।
कही न उपजै सातो तूर॥

सावण उजरे पाख में, जो ये सब दरसाएँ।
दुंद होय छत्री लड़ै, भिरैं भूमि पतिराय॥

सावण वदी में तुला री मंगल होवे, कर्क रो गुरु और सिंह रो शुक्रवार होवे। तो तालाव सूखजासी और आंधियां चालसी। किसी भी तरह री अनाज को ऊपजै नी।

सावण सुदी में भी जदि अहो लच्छण होवे तो भयानक लड़ाई होसी। राजा आपस में लड़सी।

सावन सुक्ला सत्तमी, जो गरजै अधिरात ।
बरसै तो सूखा पड़ै, नाहीं समो सुकाल ।।

सावण सुदी सात्यूं रे दिन जदि आधी रात में बादल गाजे और मेह बरसे तो अकाल पड़सी। मगर बरसे-गाजे नहीं तो समो होसो ।

सावन पहिले पाख में, जो तिथि ऊणी जाय ।
कैयक कैयक देश में, टाबर वेच्यो जाय ।।

सावण रे पहले पाख में जदि कोई तिथि टूट जाय तो कोई-कोई देश में मा आपरे टाबरां न बेच देसी। अर्थात् घोर काल पड़सी ।

–भादवा–

रवि उगंते भाद्वे, अम्मावस रविवार ।
धनुष उगंते पश्चिमें, होसी हाहाकार ।।

भादवे री अमावस रवीवारी पड़ ज्याय और सवेरे के समय पश्चिम में इन्द्रधनुष तण ज्याय, तो दुरमख काल पड़सी और दुनिया में हाहाकार मच ज्यासी ।

सावण वदी पंचमी रे दिन जोर की हवा चाले तो हे पति तुम तो मालवे चले जाओ और मैं पीहर चली जाऊंगी। अर्थात काळ पड़ेगा।

सावन कृष्ण पक्ष में देखो।
तुल को मंगल होय विसेखो॥
कर्क राशि पर गुरू जो जावै।
सिंह राशि में शुक्र सुहावै॥
ताल सो सोखै बरसै धूर।
कही न उपजै सातो तूर॥

सावण उजरे पाख में, जो ये सब दरसायँ
दुंद होय छत्री लड़ै, भिरैं भूमि पतिराय।

सावण वदी में तुला रो मंगल होवे, कर्क रो गुरु औ सिंह रो शुक्रवार होवे। तो तालाब सूखजासी और आंधिय चालसी। किसी भी तरह री अनाज को ऊपजै नी।

सावण सुदी में भी जदि अही लच्छण होवे तो भया नक लड़ाई होसी। राजा आपस में लड़सी।

सावन सुक्ला सत्तमी, जो गरजै अधिरात ।
बरसै तो सूखा पड़ै, नाहीं समो सुकाल ।।

सावण सुदी सात्यूं रे दिन जदि आधी रात में बादल गाजे श्रौर मेह बरसे तो श्रकाल पड़सी । मगर बरसे-गाजे नहीं तो समो होसी ।

सावन पहिले पाख में, जो तिथि ऊणी जाय ।
कैयक कैयक देश में, टावर वेच्यो जाय ।।

सावण रे पहले पाख में जदि कोई तिथि टूट जाय तो कोई-कोई देश में मा आपरे टावरां न वेच देसी । अर्थात् घोर काल पड़सी ।

—भादवा—

रवि उगंते भाद्वे, अम्मावस रविवार ।
धनुप उगंते पश्चिमें, होसी हाहाकार ।।

भादवे री अमावस रवीवारी पड़ ज्याय और सवेरे के समय पश्चिम में इन्द्रधनुष तण ज्याय, तो दुरभख काल पड़सी और दुनिया में हाहाकार मच ज्यासी ।

भादो की सुदि पंचमी, स्वाति संजोगी होय।
दोनो सुभ जोगें मिलै, मंगल वरतो लोय॥

भादवा सुदि पंचमी रे दिन जदि स्याती नखतर पड़ जाय तो लोग आनंद मनासी।

भादो मासे ऊजरी, लखै मूल रविवार।
तो यों भाखें भड्डरी, साख भलो निरधार॥

भादवा सुदी में रविवार के दिन मूळ नखतर होवे तो फसल आछी होसी।

भादो बदी एकादसी, जो न छिटके मेघ।
चार मास बरसे सही, कहे भड्डरी देख॥

भादवा बदी ग्यारस रे दिन जदि बादल न खिंडे तो चार माह तक बरसा होवे।

भादरवे जळ रेलसी, जो छठ अनुराधा होय।
पिछला गर्भ खड़ा करै, वर्षा चोखी होय॥

भादवा बदी छठ रे दिन जदि अनुराधा नखतर पड़ ज्याय तो मेह रो गिरतो थको गर्भ पाछो मंड ज्याय और मेह चोखो बरसे।

आसोजाँ रा मेहड़ा, दोयाँ वात विनास ।
बोरड़ियाँ बोर नहीं, विणया नहीं कपास ॥

आसोज में मेह वरसणे से दो वातां रो घाटो पड़े । पहलो तो ओ होसी कि बोरड़्यां रे बोरिया को लागेनी । दूसरे कपास में रूई को पड़ेनी ।

आसोज वदी अमावसी, जो आवै सनिवार ।
समयो होवै किर वरो, जोसी करो विचार ॥

आसोज वदी अमावस रे दिन जदि शनिचर वार पड़ ज्याय तो समो आछो को होवे नी ।

आसवानी । भागवानी ।

या

आसोज में मोती वरसे

आसोज में मेह आछा भाग हुवे वांरे वठै वरसै ।

या

आसोज में मोती वरसे ।

सासू जितरे सासरो, आसू जितरे मेह ।

जद तांई सासरे में सासू जीवे वितरे दिना ही सासरे रो सुख है। वियाही आसोज तांई मेह री आशा है।

दो आस्विन दो भादों, दो असाढ के मांह
सोना चांदी वेचके, नाज वेसाहो साह

दो आसोज, दो भादवा जिके वरस में पड़े अर्थात अधिकमास होवे, वीं बरस अकाल पड़सी। सोना - चांदी वेचर अनाज मोल लेल्यो।

नखतरां और राशियां रो प्रभाव

कृतिका तो कोरी गई, अद्रा मेह न बूंद ।
तो यो जानो भड्डरी, काल मचावे दूंद ॥

कृतिका नखतर वे बरस्यो चल्यो जाय और आर्द्रा में भी एक ही बूंद को पड़े नी तो जरूर काल पड़सी ।

रोहणी माही रोहणी, एक घड़ी जो देख ।
हाथ में खप्पर मेदिनी, घर-घर मांगे भीख ॥

जदि चेत में रोहिणी नखतर में रोहिणी एक घड़ी रह ज्याय तो इस्यो दुरमख काळ पड़सी कि लोग खप्पर लेयर घर घर मांगता फिरसी ।

मृगसिर वायु न वाजिया, रोहिणी तपे न जेठ ।
गोरी बीनो कांकरा, खड़ी खेजड़ी हेट ॥

जदि न तो रोहिणी तपी और न ही मृग वाज्यो तो किरसाण री बहू खेजड़ी नीचे खड़ी कांकरा चुगसी ।

गांवांरो-साहित्य—भाग पहलड़ो

आर्द्रा तो वरसै नहीं, मृगसर पौन न जोय।

आर्द्रा नखतर में मेह नहीं बरसा और मृगशिर नखतर में पवन को बाजो नी तो एक बूंद ही मेह वरसणरी आशा को है नी।

जो चित्रा में खेलें गाई।
निहचे खाली साख न जाई॥

गोरधन-पूजा रे दिन जदि चित्रा नखतर होवे तो शाख खाली को जावे नी।

आर्द्रा भरणी रोहिणी, मघा उतरा तीन।
दिन मंगल आंधी चलै, तबलौं बरखा छीन॥

आर्द्रा, भरणी, रोहिणी, मघा और तीनों उतरा नखतरों में मंगल रे दिन आंधी चाले तो मेह री जोर कम समझणो चाहिजे।

आगे मघा पीछे भान।
वर्षा होवै ओस समान॥

मघा नखतर तो आगे होवे और सूरज होवे पाछे तो मेह बहुत ही कम बरससी।

हूंठी अमावस मूल बिन, बिन रोहिनी अखतीज।
स्रवन बिना हो स्रावनो, आधा उपजे बीज॥

अमावस रे दिन मूल नखतर न पड़े, आखातीज रे दिन रोहिणी नखतर न पड़े और सलूणे रे दिन (सावण सुदी पुनम) श्रवण नखतर न पड़े तो आधो निपजसी।

मृगसिर वायु न बादला, रोहिनी तपे न जेठ।
आर्द्रा जो बरसे नहीं कौन सहे अलसेठ॥

जदि मृगशिरा में न तो पवन चाले और न ही बादळ होवे, जेठ में रोहिणी तपै कोनी, तो आर्द्रा में खेती कर र क्यूं भौंझट मोल लेवो। कारण समो को होवेनी।

जिही नछत्र में रवि तपै, तिही अमावस होय।
परिवा सांझी जो मिले, सूर्य ग्रहण तब होय॥

सूरज जिके नखतर में होवे उसी में अमावस भी पड़ज्याय और संज्या जदि एकम हो तो सूरज ग्रहण होवे।

जेष्ठा अद्रा सतभिखा, स्वाति सुलेखा माहिं।
जो संक्रांति तो जानिये, महंगो अन्न बिकाय॥

एक महीने में पांच शनिवार या पांच दीतवार या पांच मंगलवार पड़े तो या तो राजा मरसी या अनाज महंगो होसो।

आवत आदर ना दियो, जात न दीन्ह्यो हस्त।
तो दोनों पछतायंगे, पाहुन और गृहस्थ॥

आर्द्रा नखतर चढते समय और हस्त नखतर रे उतरती वेळा जदि मेह नहीं बरस्यो तो समो आछो को नी।

पावणे री आती वेळा सत्कार को करयोनी और विदा होती वेळा क्यूं ही हाथ में नहीं दियो तो दोनों हीपछतासी।

कर्क राशि में मंगल वारी।
ग्रहण करै दुर्भिक्ष विचारी॥

कर्क राशी में चांद होवे तब मंगलवार को चांद गहण हो तो काळ पड़सी।

गुरु वासर धन वर्षा करई।
धात्तर वारा राजा मरई॥

जद्र धन राशि में गुरु रे दिन चांद गहण हो तब

मेह बरससी । जदि दीतवार पड़ज्याय तो राजा मरसी ।

सनिचक्कर री सुणिये वात ।
मेष राशि भुगतै गुजरात ॥

वृष में करै निरोधा चार ।
भूवै आबू ओ गिरनार ॥

मिथुने पिंगल ओ मुलतान ।
कर्क कासमीर खुरसान ॥

जो सनि सिंहा करसि रंग ।
तो गढ दिल्ली होसी भंग ॥

जो सनि कन्या करै निवास ।
तो पूरब कछु माळ विनास ॥

तुला वृश्चिके जो सनि होय ।
मारवाड़ ने काट विलोय ॥

मकरा कुंभा जो सनि आवै ।
दीन्यों अन्न न कोई खावै ॥

जो धन मीन सनिचर जाय।
पवन चलै पानी जुनसाय॥

–शनि रे चक्कर री बात सुणो–

शनि मेष राशि पर होसी तो गुजरात दुःख भोगसी। वृष राशि पर होसी जद आबू और गिरनार प्रांत दुःख पायेंगे। मिथन पर होसी जद पींगल देश और मुलतान दुःख पासी। कर्क राशि पर होसी जद काश्मीर और खुरासान पर संकट आसी। सिंह राशि पर होगा तब दिल्ली रो राज भंग होसी। कन्या राशि पर होसी जद अगूणी दिशा न नुकसान पहुंचासी। वृश्चिक राशि पर होसी जद मारवाड़ न मूख मारसी।

मकर और कुंम राशियों पर होसी तो इस्यो संकट आयर पड़सी कि कोई दीयोड़ो अन्न भी खा को सकेनी।

धन और मीन राशि पर होसी तो हवा जोर री चालसी और काल पड़सी।

चढत जो बरसे चित्रा, उतरत बरसैं हस्त।
कितनो राजा डांड ले, हारे नहीं गृहस्थ॥

चित्रा नखतर रे चढते समय और हस्त नखतर रे

उतरती बेळा मेह् बरसे तो इतरो आछो समो होसी. कि राजा कितरो ही कर लेले फेर भी किसान थकै कोनी।

हथिया बरसै चित्रा मंड़राय।
घर बैठे किसान रिंरियाय॥

हस्त नखतर तो बरस रह्यो होवे और चित्रा में बादळ मंडयोड़ा होवे तो किरसाण घरां बैठ्या गीत गासी।

जब बरसेगा उत्तरा।
नाज न खावे कुतरा॥

उतरा नखतर में मेह बरस ज्यावे तो इतरो अनाज पैदा होवे कि कुत्ता ही धान को खावेनी।

सावन सुक्र न दीसे, निहचै पड़े अकाल।

सावण में शुक्र तारा अस्त हो ज्याय तो निश्चय ही काळ पड़ी।

बरसे भरणी, छोड़ो परणी।

भरणी नखतर में मेह बरसे तो विवाहिता को छोड़नी पड़सी, क्योंकि काळ पड़ने के कारण विदेश जाणो

पड़सी।

रोहन रेली रुपयारी अधेली।

रोहणी में मेह बरसे तो आछो फसल आधी ही रहसी।

पहली रोहन जल हरै, दूजी बहोतर खाय।
तीजी रोहण तिण हरै, चौथी समन्दर जाय॥

जदि पहली रोहिणी में मेह बरसै तो काळ पड़सी। दूसरी बरसै तो बहोतर दिनां तांई मेह को बरसेनी, तीसरी बरसै तो घास ही को उगैनी और चौथी बरसै तो मूसला-धार मेह बरसेला।

रोहन तपै नै मिरगला बाजै।
आद्रा में अणचींत्यो गाजै॥

रोहणी में कड़ाके रो तावड़ो तपै। मृगशिरा में आंधी चालै तो आर्द्रा में निश्चय ही मेह बरससी।

रोहण बाजै मृगला तपै।
राजा जूझै परजा खपै॥

रोहिणी नखतर में आंध्यां बाजे और मृगशिरा में

कड़ाकेरो तावड़ो तपै तो राजाओं में लड़ाई होसी और प्रजा रो विनाश होसी।

मिरगा वाऊ न वाजिया, रोहन तपी न जेठ।
केनें बांधो झोंपड़ो, बैठो खेजड़ो हेठ॥

मृगशिरा नखतर में जोर री पवन न चाले और रोहिणी नखतर में कड़ाके रो तावड़ो न तपै तो खेत में झोंपड़ो बांधणो बेकार है खेजड़ो नीचे ही बैठ जाना। क्यों कि अ सुगन काळ रा है।

दो मूसा दो कातरा, दो टीडी दो ताव।
दोयां री वादी जल हरे, दो बीसर दो वाव॥

मृगशिरा नखतर रे दिना में पहले दो दिना में पून न बाजै तो ऊंदरा घणा होसी। दूसरे दो दिना में नहीं बाजै तो कातरो होसी। तीसरे दो दिना में हवा नहीं चाले तो टिडो आसी। सातवें और आठवें दिन हवा न चाले तो लोगां न ताव चढसी। नवें और दसवें दिन हवा न बाजै, तो मेह थोड़ो बरससी। ग्यारवें और बारवें दिन हवा न बाजै तो जहरीला कीड़ा जन्मसी। तेरवें और चौदवें दिन हवा नहीं चालै तो घणी आंध्यां बाजसी।

वायव वहे जळ थळ अति भारी,

मूस उगाह दंड वस नारी।

उत्तर उपजै बहु धन धान,

खेत वास सुख करै किसान·

कोन इसान दुंदभी बाजे,

दही भात भोजन सब गाजै।

आसाढ री पूनम रे दिन में झंडी खड़ी करर हवा री रुख देखो—

अगूणो पवन चाले तो समो आछो होसी। मेह घणो बरससी। अग्नि कोण (पूर्व-दक्षिण) री हवा बाजे तो काल पड़सी और शारीरिक कष्ट भी होसी। दिखणादी पवन बाजे तो इतरी वर्षा होसी कि जल-थळ एक हो ज्यासी और उणी समय बड़ा-बड़ा योधा लड़ मरसी। नैर्ऋत कोण (दक्षिण-पश्चिम) री हवा होवे तो मेह को बरसे नी। राजा और प्रजा दोनों ही भूख मरसी। आथूणी पवन बाजतो होवे तो जमानो घणो आछो होसी। पर जाड़ो जोर रो पड़सी। वायव कोण (उत्तर-पश्चिम) री हवा होवे तो मेह घणो बरससी पर ऊंदरा घणा जन्म ज्यासी और घणो घाटो घालसी। महिलाओं को ज्यादा तकलीफ

हसी। उतरादी हवा बाजसी तो धन-धान्य री पैदावार घणी आछी होसी। किरसाण घणो आनंद लूंटसी। ईशान-कोण (पूर्व-उत्तर) री हवा चाले तो जमानो आछो होणे रे कारण हूं ब्याह-सगाई घणी होसी, नगारा बाजसी और लोग दही भात खायर मस्त रहसी।

सब दिन बरसे दखिना वाय।
कभी न बरसे बरखा पाय॥

दिखणादी हवा हूं चौमासे न छोडर सगली मोसमा में मेह बरसे।

फागण मास बहै पुरवाई, तब गोहूं में गेरुई धाई।

फागण रे महीने में पर्वा पवन चाले, तो गेहूं री फसल में गेरुई रोग लाग ज्याय।

दखनी कुलछिनी। माघ-पूष सुलछिनी॥

दिखणादी पवन आछी को होवे नी। पर पो-माह में बाजै तो लाभकारी रहवे।

वायू में जब वायु समाय।
घाघ कहे जल कहां अमाय॥

जदि घड़े में पाणी गरम हो ज्याय, चिड़यां धूड़ मं
न्हावण लाग जाय और कीड़यां अंडा लेयर जावण लाग
जाय, तो समझो मेह घणो बरससी ।

बोले मोर महातुरी, खाटी होय जु छाछ ।
मेह मही पर पड़न को, जानो काछे काछ ॥

जदि मोर जल्दी-जल्दी बोले, छाछ खाटी हो जाय
तो समझो मेह बरसने की तैयारी कर रह्यो है ।

कर्क के मंगल होयं भवानी ।
दैव धूर बरसेंगे पानी ॥

जदि सावण में कर्क राशि पर मंगल हो तो मेह
जरूर बरससी ।

सूरज तेज सतेज आड बोले अनयाली ।
मही माठ गळ जाय पवन सिर बैठे छयाली ॥
कीड़ी मेलें इंड चिड़ी रेत में न्हावै ।
कांसी कामन दौड़ आम लीलो रंग आवै ॥
डेडरो उहक चाड़ां चढे, बिसहर चढि चढि बैठे बड़ां ।
पांडियां जोतिस झूठा पड़े, घन बरसे इतरा गुणा ॥

तावड़ो जोर हूं तपण लाग जाय, बत्तख जोर हूँ बोलण लाग जाय, बकरी हवा न पीठ देयर बैठ जाय, कीड़यां अंडा लेयर जाण लाग जाय, चिड़यां धूड़ में नहावण लाग ज्याय, कांसी रो रंग नीलो पड़ ज्याय। डेडरा बाड़ में बड़न लाग ज्याय और सांप पेड़ पर चढ़ ज्याय तो मेह बरससी। जोतस झूठी हो सके है, पर अ लक्षण झूठा को हो सकेनी।

चिंयलियां बोलें रात निमाई।
छाती बाड़ां बेस छिकाई॥
गोहां रांग करें गरणाई।
जोरा मेह भोरां अजगाई॥

सारी रात मींमरचा बोले, बाड़ रे कनै बैठर बकरी छींक करे, गोई जोर हूं चिल्लाण लाग जाय और मोर बोले तो मेह बरससी।

कालिया बादळ जीव डरावे।
भूरे बादळ पाणी आवे॥

काळा बादळ तो खालो डरावे ही है। पर भूरे रंग रे बादलां हूँ मेह आवे है।

उत्तर चमकै बीजळी, पूरब वहनो बाउ।
घाघ कहे भड्डर से, बळद भीतर लाउ॥

उतराद कानी विजली खींवतो होवे और परवा पवन चाले तो बळद मायने बांधदो मेह जरूर बरससी।

चमकै पच्छिम उतर ओर।
तब जानो पानी है जोर॥

उतरादी और आयूणी दिशा में बिजळी चमके तो मेह बरससी।

पहला पवन पूरब से आवै।
बरसे मेघ अन्न झरि लावै॥

आसाढ रे महीने में पहले परवाई चाले तो मेह बरसेला और अन्न बहुत होवेला।

भल भल बके पपइयो बाणी।
कूंपल कैर तणी कमलाणी॥
जलहलतो ऊगो रवि जाणी।
पहरा माय ओसरे पाणी॥

पपीहा च्यारों मेर पी-पी बोलता फिरे, कैर री

कुंपळा कुम्मलाइज जाय, और उगता सूरज जोर हूं तपै। तो समझना चाहिजे कि एक पहर र मांय-मांय मेह बरसेला।

आभो रातो, मेह मातो।

आकाश का रंग लाल हो तो मेह अधिक बरसे।

ऊगन्तेरो माछलो अथवंतेरी मोग।
डंक कहे हे भड्डली, नदिया चढसी घोग॥

उगतो सूरज तो माछला फेंके और विश्वींजतो फेंके मोग। तो इसी जोर हूं बरसा होसी कि नदियां में पाणी मावड़े कोनी।

दुश्मण री कृपा बुरी, भली सजन री त्रास।
आडंग कर गरमी करे, जद बरसण री आस॥

वैरी री दयाहूं मित्र री फटकार आछी होवे है—इयांही बादळ मंडर गरमी होवे जद ही मेह आणे री उम्मेद बंधै है।

संवेरे रो गाजियो, नै सापुरुष रो बोलियो।
अळ्यो को जावेनी।

दिनुगे रो गाजेड़ो और सत्पुरुष री जबान खाली को जायनी ।

पाणी, पाळो और पारसा उत्तर हूं ही आवे है।

मेह, ठंड और बादशाह उतराद हूं ही आवे है। (भारत पर परदेश्यां री चढाई घणी बार उतरादी और आथूणी कूंट हूं ही हुई ही)

नाडी जल हैं तातो न्हाली ।
थिरक रवै नीलो रंग थाली ॥
चहक बैठ सीरे चूंचाली ।
कांठळ बंधै उत्तर दिस काळी ॥
जिण दिन नीली वळे जवासी ।
मांडे राड़ वाघ री मासी ॥
बादळ रहे रात रा वासी ।
तो जाणो चोकस मेह आसी ॥

जोड़े रो पाणी तातो हो ज्याय, कांसी री थाळी नीली हो ज्याय, पनडुबी पेड़ पर चढर बोलण लाग ज्याय, उतराद कानी काळी कळायण मंड ज्याय, रात रा बादळ

... रहवे, हर्यो जवासो बळ ज्याय और
... में लड़न लाग ज्याय । तो समझनो
मेह जरूर बरससी ।

चिड़ां चढ़ चितकट विराजे ।
स्याह सपेद लाल रंग साजे ॥
दिखनस पवन सूरया बाजे ।
घड़ी पलक माही मेह गाजे ॥

चिड़ो हंस माथे चढ़ बैठ ज्याय और काळो,
... लाल रंग बणाले और सूर्यो बाजण लाग ज्याय
... चाहीजे कि घड़ी पलक में ही बरसण लाग
... ।

ऊंचो नाग तर ओड़े ।
दिस पच्छिमाण बादळा दौड़े ॥
सारस चढ़े असमान सजोड़े ।
तो नदियां ढाहा जल तोड़े ॥

... रायन री टोपो पर चढ़ ज्याय, बादळ
... दौड़न लाग ज्याय, सारसो रा जोड़ा आकाश
... उड़न लाग ज्याय । तो जाणो कि नदियां रो पाणी

! बच्चा
म कर
वेल ।
ल ॥
स रा
हाळो

रो वेगो ही सगळो ठाट-बाट खतम हो ज्यासी। टाबर-लुगाई छूट ज्यासी और घर-घर मांगतो फिरसी।

मसुरिहा = वह बळद होवे है जिके रो डील लटकेड़ो होवे और पूंछ रा केश भी दो रंग रा होवे।

बड़ सींगा जनि लीज्यो मोल।
कूअे में नाखो रुपया खोल॥

बड़े सींगो वाले बळद को मत मोल लेणा। भलांई रुपया कूअे में गेर देणा।

छद्दर कहे मैं आऊं जाऊं।
सद्दर कहे गुसैंयें खाऊं॥
नौदर कहे मैं नो देश ध्याऊं।
हित कुटम्ब उपरेहित खाऊं॥

जिके बळद रे छः दांत होवे है वो कहवे है कि वह तो कठै ठहर ही कोनी। सात दांतों वाला बळद कहता है कि मैं तो मालिक न ही खाज्याऊं हूं। नौ दांतों वाला कहता है कि वह तो नवों दिशाओं कानी दौड़े है। अर्थात् किरसाण रे सगा-सम्बन्धी, मायला और परिवार वाळां ने ही खा ज्यावे है।

उदन्त बरदे उदन्त ब्याये ।
आप जाय या खसमै खाये ॥

जिको गाय उदंत हो ब्याजाय और उदंत ही बच्चा जणे, वह या तो खुद जायली या मालिक न खतम कर देसी ।

कीकर माथा सिरस हळ, हरियाणे का बैल ।
लोधा हाळा लगाय के, घर बैठे चोपड़ खेल ॥

जिण किसान रे कनै कीकर रा पाया, सिरीस रा हूल और हरियाणे रा बलद होवे, वह लोधा को हाळी लगायर घर बैठ्या चौपड़ खेल सके है ।

ऊंट

देश रे रेतीले भू भाग में ऊंट बळद हूं कम काम रो को है नी। अठै खेती सम्बन्धी घणकरासा काम ऊंट री मदद हूं ही पार पड़े है।

रेल ओर तार रे चलण हूं पहले अठै बेगो समाचार पहूंचाणे रो साधन सांड्यां हो ही। एक-एक रात में सांढणी-सवार सौ-सौ कोसां तांई समाचार पहुंचा देता और ले आता।

आज तो ऊंट बिना अठै खेती सम्बन्धी कोई सो ही काम पार को पड़ेनी। बलदां हूं बहुत ही कम काम लेइजे है। घणकरासा करसा भाई ऊंटा हूं ही खेत जोते है। घास-फूस भी ऊंटा रे गाडे हूं ही ढोवे है। बळदा री गाडी तो बहुत कम देखणे में आवे है। ऊंट घणो काम में आवे है। इये कारण हूं ऊंट री नस्ल ओर वीं रा शुभा-शुभ लछणां रो भी जाणनो खेतोखड़ां रे लिये घणो जरूरी है। वां रो ध्यान ईं कानी गयो ओर वां अठै री बोलचाल

में ऊंट रे लछणां पर कई छोटा-छोटा ओखाणां रो रचना करदी।

अह ओखाणां बळदा रे मुहावरां जिता पुराणा तो को है नी, पर ई धरती रे लोगां रे वास्ते घणा जरूरी है—

ओछी गोडी नेस कड़ड, वहै उतालै डगगू ।
वां ओठी वां करहला, आथण होसी अलग ॥

छोटी गोडी वाला ओर (कूंचळा दांत) निकळते नेस वाला ऊंट, जो उताली डगां भर रह्यो है—उण ऊंट ओर ऊंट-सवार ने सांझ घणी दूर पर जायर होसी।

तीखो मूंडो झबरा कान।
श्याम रंग रो ऊंट जवान ॥

तीखै मुंडै ओर झबरा कान तथा काळै रंग रो ऊंट घणो आछी मानीजे है।

१. लम्बी नस वालो ऊंट शुभ होवै है।
२. चौड़ी छाती रो ऊंट शुभ ओर घणो बोझ उठाणे वालो होवे है।
३. छोटै इडर रो ऊंट शुभ मानीजे है।

४. छोटी पींड़ी रो ऊंट चोखो होवै है।

५. तीखो मूंडो और तीखा कानां रो ऊंट शुभ होवै है।

ऊंट मिठाई इस्त्री, सोनो गहणो शाह।
पांच चीज पृथ्वी सिरै, वाह बीकाणा वाह॥

ऊंट, सीरणी, लुगाई, सोने रो गहणो और साहुकार—अह पांचू सारे संसार हूं आछा होवे है। इये वास्ते बीकानेर ने वाह वाह ।

मारवाड़ नर नीपजै,
नारी जेसलमेर ।
तुरी तो सिंधा सांतरा,
करहल बीकानेर ।

मारवाड़ में मिनख, जेसलमेर में लुगायां, सिंध में घोड़ा और ऊंट बीकानेर में घणा आछा होवे है।

१. तली उघाड़ ऊंट अशुम होवे है।

२. डोलणो ऊंट अशुम होवे है ।

३. बैठणे में आगला गोडा ढाळै जिती ही देर लारला पगा हूं बैठणे में लगावे जद तो ठीक है। पण जदी लारला पगा हूं बैठणे में जिती घणी देर लगावे उतरो ही ऊंट

असुभ मानीजे ।

४. जिके ऊंट रो डुडर रगड़ीजै वो ऊंट काम रो को होवे नो । बीने लागटियो ऊंट कहवै है ।

५. संकड़ो वगला रो ऊंट आछो को होवेनो ।

ऊंट उठागळ नेशगळ ।
यहै उताळे घग्ग ।
इण ओठी इण ऊंठिया
आथण होसी अलग्ग ॥

उठाणै में उतावलो, नेठा निकलणै वालो और जिको लम्बै डगां हूं दौड़ै । वौ ऊंट और ऊंट सवार ने आथण बहुत दूर जायर होसी ।

तींढ़ाण ढाण टोडरा ।
करू वग्गाण जोडरा ॥
निरग्रत लम्बै भोडरा ।
छिसक उठै झींधियो ॥
पग दो पागड़े,
पच्चास कोस धागड़े ।

बीजाई (जोताई)

जितरो गहरो बीजो बीज ।
उतरो ही चोखो फल लीज ॥

बीज जितरो ऊंडो बीजीजसी उतरो ही आछो फळसी ।

खेती तो थोड़ा करो, महनत करो सिवाय ।
राम करै वीं मिनखर, टोटो कदै न आय ॥

जिको माई खेत तो थोड़ो बीजे, पण महनत घणी करे—इस्ये महनतो मिनख रे घाटो कदेई को आवेनी ।

सब काम हळ पर । जो मालक सीर पर ॥

सारो काम हळ पर है । पर शर्त आ है कि मालिक खुद सीर पर काम करे ।

उत्तम खेती धणी सेती ।
मध्यम खेती भाई सेती ॥

निकृष्ट खेती नोकर सेती ।
बिगड़ गई तो बलाय सेती ॥

जिको खेतीखड़ खुद खेत में काम करे बींरी खेती सह हूं आछी होसी । जिके री खेती भाइयां रे भरोसे छोडेड़ी है बा मध्यम रहसी । पण जिको भाई नोकरां पर खेत छोड़ दियो बींरे पल्ले क्यूं ही को पड़नो, क्योंकि खेत बिगड़ग्यो इयेरो चिन्त्या नोकरां न को होवे नी ।

खेती धणियां सेती,
आधी कींकी, देखे जींकी ।
बिगड़े कींकी, घर बैठ्यो पूछे बींकी ॥

खेती पूरी बींरी ही होवे है जिको खुद खेत में काम करे है । आधी खेती बींरी होवे जिको खेत न आंख्यां हूं देखे है । बिगड़े बींरी है जिको घरां बैठ्यो ही खेती रा समाचार पूछतो रहवे है । अर्थात् खुद जायर खेत देखे कोनी ।

जोतें खेत घास ना टूटे ।
उणरा भाग सांझ ही फूटे ॥

हळ हूं जदि घास जड़ समेत ऊपड़े नहीं तो इस्ये

किसान रो भाग फूटेड़ो ही समझो ।

बहुत करैं सो ओर को, थोड़ो करे सो आपको ।

घणो जमीं बोजं बा औरा न लाभ पहुंचावे । क्यूं कि घणो खेती समणो में को आवेनी । पण थोड़ी बीजे बा आपरी होवे है क्यूं कि वो खुद साम्भले ।

खेती तो उणरी रही, जो हळ थावे हाथ ।
उणरी खेती क्या रही, जो खेत कभी नहीं जात ॥

खेती तो वीं ने ही फायदो पहुंचावे है जिको अपणे हाथां हूं हळ बावे । जिको खेत जावे ही कोनी वो खेती करे ही क्यूं ।

जेहि घर साळे सारथी, औ तिरिया की सीख ।
सावण में हळ बैल विन, तीनों मांगे भीख ॥

जिको साळे री सला हूं चालै, जिको लुगायां री सीख मानै तथा जिके कनै सावण में हळ और बळद को होवे नी वे तीनु ही भीख मांगसी ।

जे तूं दे तोड़-मरोड़ ।
हूं द्यूं तेरी कोठी फोड़ ॥

बाजरी कहवे कि हे हाळी जदि तू मने तोड़-मरोड़ देसी तो हूं इतरो होस्यूं कि थारी कोठलो में नावड़्ं हो कोनी।

बायर के हंसियो, बाकी हे जद कसियो।

बीजर कांई राजी हुयो जद तांई नीनाण काढणो बाकी है।

हळ हाला, खेत पड़ाला।

हळ वो ही चोखो है जिके री हाळ मजबूत होवे। खेत वो ही आछो होवे जिके में पड़ाल होवे। (धोरे री ढाळ)

खास बात आ है कि जठे तांई हो सके बीज घणो ऊंडो बीजो। कारण ऊंडो बीज घणी गीली रेत में होणे रे कारण जल्दी ही उकळर जाय कोनी।

दूसरे कम गहरा ऊमरां में बीजेड़े बीज ने कमेड़यां चुग ज्याय। धान री जड़ ऊंची होणे रे कारण थोड़ी सी ही मेह री खंच पड़ता ही बो धान उकळर चल्यो जाय।

तीसरे गहरो हळ लगाणे हूं घास, गंठियो और दूसरा पोधांरी जड़ां उखड़ जाणे रे कारण खेत में निनाण घणो को होवेनी। इं कारण हूं धान रा छोटा पोधां ने

खाद देस्यो तो घणोसारो अनाज होसी। बिना खाद रे खेत री उपजाऊ माटी भी रहवे कोनी। खाली रेत ही पड़ी रहसी।

जायर नाखो गोबर खाद।
जद देखो खेती रो स्वाद॥

जदि खेत में गोबर री खाद नाखस्यो तो खेती करणे में आनंद भी आसी।

आसाढ में खाद खेत को जावे।
जद मूठी भर दाना पावे॥

आसाढ लागते ही जदि खेत में खाद लाग ज्याय तो मनचाही खेती करने रो आनन्द मिलसी।

गुंवार रा पता खेत में छोड़े।
तो मन चाही सिट्टी तोड़े॥

जदि ग़ुवार रे बड़ में बाजरी बीजो तो मन चाही सिट्टी तोड़ लो।

खादे कूड़ा ना टलै, करम लिख्या टळ जाय।
रहीमन कहत घनाय के, देखो पास घनाया।

रहीम जी कहवे है कि भाग री रेखा टळ सके है। पर कचरे री खाद वालो खेत खाली को जायनो।

सौ वार वाओ। न एक वार खताओ॥

सौ वार बाणो हूं एक वार खाद देयर बाणो बदतो रहवे।

खाद करे उपाद

बीज रो तोल

जो गेहूं बीजो पांच पसेरी ।
मटर बीजो तीसा सेरी ॥
बीजो चणा पसेरी तीन ।
मक्का बीजो सेर तीन ॥
दो सेर मेथी दो सेर मास ।
डेढ़ सेर बीघा बीज कपास ॥
डेढ़ सेर बीघा तीसी नाओ ।
डेढ़ सेर बजरा बजरी बाओ ॥
पांच सेर बीघा मोठ गुंवार ।
तिल्ली सरसों अंजुली भार ॥
इण विधि बीजे बीज किसान ।
दूणे लाभ री खेती जाण ॥

जो और गेहूँ एक बीघे में पच्चीस सेर बोजो, मटर एक बीघे में तीस सेर, चणा पन्दरह सेर, मक्का तीन सेर, मेथी और उड़द दो-दो सेर, कपास डेढ सेर, बाजरी डेढ सेर, मोठ गुंवार पांच-पांच सेर और तिल और सरसू तो लप भर ही बोजो । जदि किसान इये माप हूँ बीज बीजसी तो खेती दूणो लाभ री होसी ।

रास पुराणी बाजरी, मेंढक फाल जंवार ।
इक्कड़ दुक्कड़ मोठिया, कीड़ी नाल गुंवार ।।

बाजरी रास और पुराणी री दूरी रै हिसाब हूँ बीजणी चाहिजे । जुंवार मेंडको जती दूर कूद सकै विती दूरी पर बीजणी चोखी रहवै । मोठ बाजरी रै साथै छीदा-छीदा ही बीजणां आछा रहवै । पण गुंवार कीड़ नाळ री तरह लगातार बीजणो आछो रहवै ।

बीजाई रे वखत हालो नै बीज किती-किती दूरी पर बीजणो है इयेरो घणो ध्यान राखणो पड़ै है क्यूंकि

जाडो बीजणो ही चोखो कोनी और घणो छीदो बीजणो भी कामरो को होवै नी । कर्द-फर्द आली रेत होण रै कारण नाली रै आगै डाट आ ज्यायवै और ऊमरा रा ऊमरा खाली रह ज्याय । इये वास्ते हाळी नै वखत-वखत पर नाली नै ठरकातो रहणो चाहिजे । क्यूं कि ठरकाणै हूं रेत नीचै पड़ ज्याय ।

दीजाई

बुध बृहस्पति दो भले, सुक्र न भले वखान ।
रवि मंगल बूणी करे, द्वार न आवे धान ॥

हळसोतिये रे वास्ते बुध और गुरुवार रा दिन घणा आछा है । शुक्रवार रो दिन आछो कोनी । रवि और मंगल रे दिन हलसोतियो करने हूं अनाज की पैदावार को होवे भी ।

बुध वावणी अर शुक्र लावणी ।

बीजणो बुधवार हूं और काटणो शुक्रवार हूं शुभ रहे ।

भादों की छठ चांदनी, जो अनुराधा होय ।
ऊबर खाबर बीज द्यो, अन्न घणेरो होय ॥

भादवा सुदी छठ रे दिन अनुराधा नखतर पड़ता हो तो ऊंची नीची जमीन में भी बीज देस्यो तो भी अनाज

जाड़ो बीजणो ही चोखो कोनी और घणो दोरो बीजणो नी कामरो को होवै नी । कदै-कदै आलो रेत होण रै कारण नालो रै आगै डाट आ ज्यावै और ऊमरा रा ऊमरा खाली रह ज्याय । इये वास्ते हाळी नैं चलत-चलत पर नालो नैं ठरकातो रहणो चाहिजे । क्यूं कि ठरकाणै हूं रेत नीचै पड़ ज्याय ।

बीजाई

बुध वृहस्पति दो भले, सुक न भले बखान ।
रवि मंगल बूणी करे, द्वार न आवे धान ॥

हळसोतिये रे वास्ते बुध और गुरुवार रा दिन घणा आछा है । शुक्रवार रो दिन आछो कोनी । रवि और मंगल रे दिन हलसोतियो करने हूं अनाज की पैदावार को होवे नी ।

बुध बावणी अर शुक्र लावणी ।

बीजणो बुधवार हूं और काटणो शुक्रवार हूं शुभ रहे ।

भादों की छठ चांदनी, जो अनुराधा होय ।
ऊबर खाबर बीज दयो, अन्न घणेरो होय ॥

भादवा सुदी छठ रे दिन अनुराधा नखतर पड़ता हो तो ऊंचो नीचो जमीन में भी बीज देस्यो तो भी अनाज

जाडो बीजणो ही चोखो कोनी और घणो छोटो बीजणो भी कामरो को होवै नी । कदै-कदै आलो रेत होण रै कारण नालो रै आगै डाट आ ज्यायवै और ऊमरा रा ऊमरा खालो रह ज्याय । इये वास्ते हाळी नै बखत-बखत पर नालो नै ठरकातो रहणो चाहिजे । क्यूं कि ठरकाणै हूं रेत नीचै पड़ ज्याय ।

बीजाई

बुद्ध बृहस्पति दो भले, सुक्र न भले वखान ।
रवि मंगल चूणी करे, द्वार न आवे धान ॥

हळसोतिये रे वास्ते बुध और गुरुवार रा दिन घणा आछा है । शुक्रवार रो दिन आछो कोनी । रवि और मंगल रे दिन हलसोतियो करने हूं अनाज की पैदावार को होवे नी ।

बुध बावणी अर शुक्र लावणी ।

बीजणो बुधवार हूं और काटणो शुक्रवार हूं शुभ रहे ।

भादों की छठ चांदनी, जो अनुराधा होय ।
ऊधर खावर बीज द्यो, अन्न घणेरो होय ॥

भादवा सुदी छठ रे दिन अनुराधा नखतर पड़ता हो तो ऊंची नीची जमीन में भी बीज देस्यो तो भी अनाज

घणो ही होसी।

रोहणी खाट मृगसिरा छावणी।
आद्रा आवे धान री बीजणी॥

रोहणी नखतर में माचा-डँला वुणलो और मृगशिरा नखतर में घरा री छावणी करल्यो। क्योंकि आर्द्रा नखतर में बीजाई रो काम करनो है।

उगी हिरणी, फूल्यो कास।
अब का बोवे निगोड़े मास॥

हिरण्यां उगण लागगी और कास पर फूल आयग्या। हे मूर्ख, तू अब उड़द क्यूं बीज रह्यो है?

बीजे बाजरी आये पुक्ख।
फिर मन कैसे पावे सुक्ख॥

पुष्य नखतर लागग्यो पर जदि बाजरी बीजसी तो मन ने आनंद कैसे मिलेगा?

कदम-कदम पर बाजरो, मेंडक कुदोनी ज्वार।
ऐसे बीजे जो कोई, घर-घर भरे भंडार॥

एक-एक पावडे री दूरी पर बाजरी और मेंढक की उछाल पर ज्वार बीजे तो उण रे घर कोठ्यां भर ज्यासी।

पुळरा बाया मोतो नीपजे है।

वखत पर करी बिजाई ही लाभ पहुंचावे है।

उगग्यो आहेड़ी, अब के देखे बाहेड़ी।

जद आहेड़ी (पारधी) उगण लागग्यो, तो बाहेड़ी न मत देखो। कारण अब अनाज उगैं कोनी।

ऊमरे ने ऊमरो को नावड़े नी।

पहले ऊमरे री उपज में दूसरे ऊमरे री उपज नावड़ै कोनी।

जको किसान वखत पर बीजाई को कर सकैनी बीनैं पछताणो पड़ै। क्यूं कि आपणं अठै तो दूसरै-तीसरै दिन तो धरती सूक ही ज्याय। जदि तीन दिना री देरी करदै तो बाएो रो वखत तो गयो। फेर न जाणैं कद मेह बरसैं। इण वास्ते चोमासो लागते ही समझदार और बळिया खेतीखड़ हळसूं ज त्यार कर राखै है। जकै हूं मेह बरसता ही खेत में जा हळ खड़्यो करदै। ब ही कहवै है कि "ऊमरै न ऊमरो को नावड़ै नी।"

घणो ही होसी ।

रोहणी खाट मृगसिरा छावणी ।
आद्रा आवे धान री बीजणी ॥

रोहणी नखतर में माचा-डेला बुणलो और मृगशिरा नखतर में घरा री छावणी करल्यो । क्योंकि आर्द्रा नखतर में बोजाई रो काम करनो है ।

उगी हिरणी, फूल्यो कास ।
अब का बोवे निगोड़े मास ॥

हिरण्यां उगण लागगी और कास पर फूल आयग्या । हे मूर्ख, तू अब उड़द क्यूं बीज रह्यो है ?

बीजे बाजरी आये पुक्ख ।
फिर मन कैसे पावे सुक्ख ॥

पुष्य नखतर लागणे पर जदि बाजरी बीजसी तो मन नै आनंद कैसे मिलेगा ?

कद्म-कद्म पर बाजरो, मेडक कुदोनी ज्वार ।
ऐसे बीजे जो कोई, घर-घर भरे भंडार ॥

एक-एक पावडे री दूरी पर बाजरो और मेंढक की उछाल पर ज्वार बोजे तो उण रे घर कोठ्यां भर ज्यासी।

पुळरा वाया मोतो नीपजे है।

वखत पर करी बिजाई ही लाभ पहुंचावे है।

उगग्यो आहेड़ी, अब के देखे बाहेड़ी।

जद आहेड़ो (पारधो) उगण लागग्यो, तो बाहेड़ी न मत देखो। कारण अब अनाज उगँ कोनी।

ऊमरे ने ऊमरो को नात्रड़े नी।

पहले ऊमरे री उपज नँ दूसरे ऊमरे री उपज नावड़ कोनी।

जको किसान वखत पर बोजाई को कर सकँनी बीनँ पछताणो पड़ । क्यूं कि आपणँ अठै तो दूसरँ-तीसरँ दिन तो धरती सूक ही ज्याय। जदि तीन दिना री देरी करदँ तो बाणे रो वखत तो गयो। फेर न जाणँ कद मेह बरसँ। इण वास्ते चोमासो लागते ही समझदार और बळिया खेतीखड़ हळसूंज त्यार कर राखे है। जकँ हूं मेह बरसता ही खेत में जा हळ खड़्यो करदँ। य ही कहवँ है कि "ऊमरँ न ऊमरो को नावड़ नी।"

दूसरै सगळां धानारी बा री बखत न्यारो-न्यारो होवै है। बाजरो री बा जेठ रै उजाळै पाख हूं लेयर आसाढ उतरै तांई ही रहवै है। इयेरे बाद बायेड़ो बाजरो जेठ में बायेड़ो बाजरो न को नावड़ै नी। इये वास्ते ही समजदार खेतीखड़ां में आ कहावत है कि जेठ री बाजरो और मोबी पूत भागवाना रै ही होवै है।"

मोठ गुंवार री बा वास्ते सावण रो महीनो ही खास कर है। बींया तो मेह मोड़ो बरसै जद गोगे तांई मोठ-गुंवार री बोजाई करै है। पाछत बोजाई में धान जद ही होवै है जद पाछत विरखा बरसै।

बाजरी रै साथै भी चतुर और समजदार खेतीखड़ कोई-कोई दाणों मोठ-गुंवार और तिलां री भी मिलादे है। इनै तेड़ो कहवै है। तेड़ै रा मोठ गुंवार आछी बिरखा होणो हूं चोखा होवै है। पर झांझली आ ज्यांणै पर मोठ-गुंवार रा पौधा उकळ-उकळ बल्या जाय। बाजरी रा पौधा ही झांझली में जल्या भुज्या खड़्या रहवै है और बिरखा होता ही झट सिर सामलै है।

निनाण - काढणो

सावण भादों खेत निरावै ।
तब गृहस्थ घणो सुख पावै ॥

सावण-भादवे में जदि खेतां रो निनाण काढले तो अनाज आछो और घणो होसी ।

बांध कुहाड़ी खुरपी हाथ ।
लाठी दांती राखे साथ ॥

काटे घास निनाणे खेत ।
पूरा किसान वहि कहि देत ॥

कुहाड़ो और खुरपी हाथ में लेयर तथा दांती और लाठी साथ में रखकर जो किसान घास काटकर खेत रो निनाण करतो रहवे है, वही खरा खेतोखड़ है ।

वायर के हंसियो, वाकी है जद कसियो ।

निनाण - काढणो

सावण भादों खेत निरावै ।
तब गृहस्थ घणो सुख पावै ॥

सावण-भादवे में जदि खेतां रो निनाण काढले तो अनाज आछो और घणो होसी ।

बांध कुहाड़ी खुरपी हाथ ।
लाठी दांती राखे साथ ॥

काटे घास निनाणे खेत ।
पूरा किसान वहि कहि देत ॥

कुहाड़ी और खुरपी हाथ में लेयर तथा दांती और लाठी साथ में रखकर जो किसान घास काटकर खेत रो निनाण करतो रहवे है, वही खरा खेतीखड़ है ।

बायर के हंसियो, बाकी है जद कसियो ।

दूसरै सगळां धानारी वा रो बखत न्यारो-न्यारो होवै है। बाजरी री बा जेठ रै उजाळै पाख हूं लेयर आसाढ उतरै तांई ही रहवै है। इयेरे बाद बायेड़ी बाजरी जेठ में बायेड़ी बाजरी न को नावड़ै नी। इये वास्ते ही समजदार खेतीखड़ां में आ कहावत है कि जेठ री बाजरी और मोबी पूत भागवाना रै हो होवै है।"

मोठ गुंवार री वा वास्ते सावण रो महीनो ही खास कर है। बींया तो मेह मोड़ो बरसै जद गोगे तांई मोठ-गुंवार री बोजाई करै है। पाछत बोजाई में धान जद ही होवै है जद पाछत बिरखा बरसै।

बाजरो रै साथै भी चतुर और समजदार खेती-खड़ कोई-कोई दाणों मोठ-गुंवार और तिलां रो भी मिलावे है। इनै तेड़ो कहवै है। तेड़ै रा मोठ गुंवार आछी बिरखा होणो हूं चोखा होवै है। पर भांभली आ ज्यांणै पर मोठ-गुंवार रा पौधा उकळ-उकळ चल्या जाय। बाजरो रा पौधा ही भांभली में जल्या भुज्या खड़्या रहवै है और बिरखा होता ही भट सिर सामलै है।

निनाण - काढणो

सावण भादों खेत निरावै ।
तब गृहस्थ घणो सुख पावै ॥

सावण-भादवे में जदि खेतां रो निनाण काढले तो अनाज आछो और घणो होतो ।

बांध कुहाड़ी खुरपी हाथ ।
लाठी दांती राखे साथ ॥

काटे घास निनाणे खेत ।
पूरा किसान वहि कहि देत ॥

कुहाड़ी और खुरपी हाथ में लेयर तथा दांती और लाठी साथ में रखकर जो किसान घास काटकर खेत रो निनाण करतो रहवे है, वही खरा खेतीखड़ है ।

बायर के हंसियो, बाकी है जद कसियो ।

दूसरै सगळां धानारी बा रो बखत होवै है। बाजरी री बा जेठ रै उजाळै पाख उतरै तांई ही रहवै है। इयेरे बाद बायेड़ो बायेड़ी बाजरी न को नावड़ै नी। इये वा खेतीखड़ां में आ कहावत है कि जेठ री र पूत भागधाना रै ही होवै है।"

मोठ गुंवार री बा वास्ते सा खास कर है। बींया तो मेह मोड़ो मोठ-गुंवार री बीजाई करै है। पा जद ही होवै है जद पाछत विरखा

बाजरी रै साथै भी चतुर खड़ कोई-कोई दाणों मोठ-गुंवार है। इनै तेड़ो कहवै है। तेड़ै र होणो हूं चोखा होवै है। पर गुंवार रा पौधा उकळ-उकळ पौधा ही झांभलो में जल्या विरखा होता ही भट सिर

बायर पर्टाई राजी हुवो जद नीनाण काढणो बाकी पड़चो है ।

बायर के हंसियो, कस लेर्मा कसियो ।

बात साची है । आछी तरह धानरा बूंटी नै निनाण्यां बिना किसान रै पल्लै क्यूं ही को पड़ नी । इये कारण ही आ कहावत बणी है । खाली बीज र खेत नै छोड़ देणै हूं खेतीखड़ रै क्यूं ही हाथ को आवैनी । कारण खर पतवार अर्थात् दूसरा घास वगैरा रा पौधा जमीन री कस खींच लै ओर बोजेड़ो धान सूको हो रह ज्यावै । इये वास्ते नीनाण समय पर करणो घणो जरूरी है । नीनाण काढणं में बड़ी समझदारी और चतुराई री भी जरूरत है । कारण मोठ-बाजरी और गुंवार रा छोटा-छोटा पौधां रो दूसरा पौधां रै साथे कटणै रो तथा रेत हूं दबणै रो घणो खतरो रहवै है । ई खतरै हूं बचाणै खातिर समझदार और महनती खेतीखड़ झूंकेड़ा नीनाण काढै, जकै हूं बानै धान रा छोटा-छोटा पौधा दीखता रहवै और बानै बचा सकै । इये वास्ते ही ई कहावत कह्यो है कि 'कस लेसो कसियो ।'

वायर कांई राजी हुयो जद नीनाण काढणो वाको पड़्यो है।

वायर के हंसियो, कस लेसी कसियो।

बात साची है। आछी तरह धानरा बूंटां नैं निनाण्यां विना किसान रैं पल्लै क्यूं ही को पड़ै नी। इये कारण ही आ कहावत बणी है। खाली वोज र खेत नैं छोड़ देणैं हूं खेतीखड़ रैं क्यूं ही हाथ को आवैनो। कारण खर पतवार अर्थात् दूसरा घास वगैरा रा पौधा जमीन रो कस खींच लै और बीजेड़ो धान सूको ही रह ज्यावै। इये वास्ते नीनाण समय पर करणो घणो जरूरी है। नीनाण काढणैं में बड़ी समझदारी और चतुराई री भी जरूरत है। कारण मोठ-बाजरी और गुंवार रा छोटा-छोटा पौधां रो दूसरा पौधां रैं साथे कटणैं रो तथा रेत हूँ दबणै रो घणो खतरो रहवै है। ईं खतरैं हूं बचाणैं खातिर समझदार और महनती खेतीखड़ झूकेड़ा नीनाण काढै, जकै हूं बानैं धान रा छोटा-छोटा पौधा दीखता रहवै और बानैं बचा. सकै। इये वास्ते ही ईं कहावत में कह्यो है कि 'कस लेसी कसियो।'